chapter. 4

अध्याय : ४

“हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में
मनावैज्ञानिक ग्रंथियों का निरूपण ।”

४:०१:०० प्रास्ताविक :

धागा, रस्सी या सूतली जैसी कोई वस्तु जब टूट जाती है, और उसे जोड़ना होता है तो गाँठ लगाना पड़ता है । गाँठ लगाने से वह वस्तु तो एक हो जाती है परन्तु उस वस्तुका वह रूप नहीं रहता जो पहले होता था । उसे गाँठवाला धागा, गांठवाली रस्सी या गांठवाली सूतली ही कहा जाएगा और यह गाँठ उसमें साफ दिखाई पड़ती है ।

ठीक यही बात मानव सम्बन्धों और मानव व्यवहारों पर भी लागू होती है । समाज में कई प्रकार के सम्बन्ध होते हैं - माता-पिता, भाई बहन, पिता-पुत्र, भाई-भाई, सास-बहू, देवरानी-जेठानी, बुआ-मौसी इत्यादि सम्बन्धों को हम पारिवारिक या कौटुंबिक सम्बन्ध कह सकते हैं । इसके अलावा सामाजिक

सम्बन्ध भी होते हैं । मित्रता के सम्बन्धों को हम इस कोटि में रख सकते हैं । व्यावसायिक सम्बन्ध भी होते है । ये सारे सम्बन्ध प्रेम, सहकार और विश्वास पर चलते हैं । जब तक नि:स्वार्थ रूप से, नैसर्गिक ढंग से ये सम्बन्ध चलते हैं; तब तक उसमें एक प्रकार की उष्मा या सौहार्द के दर्शन होते हैं । परंतु किसी कारण से जब उसमें स्वार्थ, शंका, मनमुटाव इत्यादि उत्पन्न होते हैं तब वे सम्बन्ध टूट जाते हैं । लाख प्रयत्न करने पर भी उन सम्बन्धों में वह पहलेवाली उष्मा, वह पहलेवाला सौहार्द, वह पहलेवाला विश्वास, वह पहलेवाली तड़प और लगन पैदा नहीं हो सकते। एक बार जब सम्बन्धों में मनमुटाव आ जाता है तब उनमें गाँठ पड़ ही जाती है । इसी गाँठ को तत्सम् शब्दावली में 'ग्रंथि' कहा जाता है ।

मानव व्यवहारों में जब ऐसी गाँठ पड़ती है तब मोहभंग की स्थिति का निर्माण होता है । इस मोहभंग के कारण व्यक्ति का मन टूट जाता है और उसके Libido में मनोग्रंथि का निर्माण हो जाता है । इस मनोग्रंथि के कारण उस व्यक्ति का व्यवहार पूर्ववत नहीं रहता । जिस प्रकार की ग्रंथि हो और जिस व्यक्ति के कारण ग्रंथि हो उसके प्रति उसका नैसर्गिक व्यवहार नहीं रहता । कई बार यह ग्रंथि व्यक्ति-विशेष से वर्ग-विशेष तक व्याप्त होती है । 'प्रेत और छाया' के पारसनाथ का मानव सम्बन्धों से विश्वास ही उठ जाता है । माता-पुत्र में तो एक पवित्र प्रकार का सम्बन्ध होता है । पुत्र के लिए माता पूज्य, आदरणीय और वन्दनीय होती है किन्तु पिता की उस बात के कारण पारसनाथ के मन में ग्रंथि पड़ जाती है और समूची स्त्री जाति पर से उसका विश्वास उठ जाता है । वह भूल जाता है कि स्त्री और पुरुष के बीच में माता-पुत्र, भाई-बहन, पिता-पुत्री जैसे सम्बन्ध भी हो सकते हैं । पारसनाथ के लिए स्त्री-पुरुष अब केवल नर-मादा है । मानवीय सम्बन्धों की पवित्रता से उसका विश्वास उठ जाता है वह उस ग्रंथि के कारण होता है । इवान वोट महोदय ने उपन्यास के संदर्भ में

लिखा है -"Since they novelists primary task is to convey the fidelity of human experience attention to any preestablishal formal convention can only endanger his success"[१] अर्थात् मानव अनुभव को उसकी समग्रता के साथ प्रस्तुत करना उपन्यासकार का प्रथम कर्तव्य है, अत: पूर्व स्थापित कोई भी कथानक रूढि उसकी सफलता में बाधक हो सकती है । यहाँ हमारा तात्पर्य युवान वोट महोदय के पूर्व कथन से है कि उपन्यासकार का कार्य मानव अनुभव हो उसकी समग्रता में प्रस्तुत करना है और यदि मानव अनुभव को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करना हो तो मानव व्यवहार की आंतरिक या सूक्ष्म गतिविधियों को समझना होगा । मानव व्यवहार की ये आंतरिक गतिविधियाँ मनोग्रंथियों के अध्ययन के बिना पकड़ में नहीं आ सकती । मानव व्यवहार को समझने के लिए मनोग्रंथियों को समझना अत्यन्त आवश्यक है ।

संप्रति प्रकाशित भगवानसिंह के उपन्यास 'उन्माद' में रंजना पिता के नियंत्रण और पितृछाया में पलती है । अत: उस पितृसत्ताक परिवार में उसकी भूमिका केवल आदेशों के पालन एवं उपदेशों के पालन की थी । फलत: दमित वासनाओं के कारण उसकी यौनाकांक्षा विद्रोह करती है । उसमें यौन ग्रंथि (Sexual complex)विकसित होती है । इस यौन-ग्रंथि के कारण वह बहुत उन्मत्त हो जाती है । अपने प्रेमी मनोज को जब वह एकांत सुख के क्षणों में मिलती है तब वह साधारणता से कुछ ज्यादा ही चहकती है । मनोज का यह व्यवहार कई बार बेतुका लगता है । वह रंजना को कभी टोकता भी है कि तुम्हारी यह चहक और चुहलबाजियाँ तुम्हारी माँ के पिता के कानों में पड़ती होंगी । तुम्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए । मनोज के ऐसा कहने पर रंजना अपने चहक की लय या हँसी और बढ़ा देती है और अपने एकांतिक क्षणों की 'आह-उह' को अधिक श्रव्य बनाने का प्रयास करती है । वह मनोज से कहती भी है - "यही तो मैं चाहती हूँ । मैं अपने सुख से उन्हें रौंद देना चाहती हूँ ।

उनके अवसाद को और बढ़ाकर ।''[२]

इसी प्रकार की यौन-ग्रंथि इसी उपन्यास की मिसेज़ मेहता में भी मिलती है । मिसेज़ मेहता एक बच्चे की माँ बनने के बाद विधवा हो गई थी । भावुकता के दौर में वह दूसरी शादी नहीं करती और अपने पुत्र के लालन-पालन में पूर्णतया खो जाती है । किन्तु लड़का जब युवान हो जाता है और विवाह के उपरान्त अपनी पत्नी के साथ सुखी जीवन बिताने लगता है तब मिसेज़ मेहता की सारी दमित लालसाएँ यौन ग्रंथि का रूप लेती हैं । जिस लड़के को उन्होंने अनेक कष्टों से पाला था, वह अब संसार के मजे ले रहा था । अत: यौन-ग्रंथि के कारण मिसेज़ मेहता अपने लड़के से ही बदला लेने के लिए मुक्त यौन-जीवन की तरफ आकर्षित होती है । उसके लिए वह धार्मिक सत्संग का आश्रय ग्रहण करती है । एक स्थान पर वह कहती है - ''यह जीवन भोग है और इसे भोगकर ही समझा जा सकता है कि हमें जीवन मिला है, जो इसे भोग नहीं सकता, वह जीवित नहीं है । मैं आपके सामने कह सकती हूँ, क्योंकि मैंने आपके समाज द्वारा निर्मित मर्यादाओं को ओढ़कर अपनी उम्र के सबसे गौरवभरे काल को शीतनिद्रा में गुजार दिया । मैंने तय किया, अब मैं निर्भय होकर अपना सुख और भोग प्राप्त करूँगी और किया ।''[३]

इस यौन ग्रंथि के कारण रंजना लगभग 'निम्फो' जैसा व्यवहार करती है । एक प्रेमी से धोखा खाने के बाद भी वह इस बात से संतुष्ट है कि उसने उससे वह पाया जो एक स्त्री अपने पति से पाती है । वह अपने दूसरे प्रेमी से कहती है - ''काश, कोई दूसरी बार वैसे ही धोखा करनेवाला मिल जाता और मैं इसे भाँप भी लेती तो उसे इन्कार नहीं कर पाती । तुम दोगे ऐसा धोखा ? बोलो ।''[४] ऐसा कहते हुए रंजना अपने दूसरे प्रेमी को अपने कमरे में लगभग घसीटती हुई ले जाती है और कमरा भीतर से बंद कर देती है । रंजना का यह

व्यवहार उसकी यौन-ग्रंथि के कारण है और उसमें यह यौन ग्रंथि दमित वासनाओं के कारण उत्पन्न हुई है ।

४:०२:०० मनोवैज्ञानिक ग्रंथियाँ और मानव व्यवहार :

ऊपर 'प्रेत और छाया' तथा 'उन्माद' उपन्यास के पात्रों की मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों की जो बात कही गई है उनसे इतना तो अवश्य प्रतीत होता है कि मनुष्य के व्यवहार (Behaviour) पर इन मनोग्रंथियों का गहरा प्रभाव होता है । हम लाख कोशिश करें इन मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों की गिरफ़्त से मुक्त नहीं हो सकते । ये ग्रंथियाँ किसी-न-किसी तरह मानव व्यवहार को प्रभावित और परिचालित करती हैं । कई बार ऐसा अनुभव होता है कि किसी व्यक्ति के साथ के व्यवहार में हम कोई अशिष्टता कर बैठते हैं । हम सोचते हैं यह अप्रत्याशित रूप से और अचानक हुआ है । पर वह अचानक नहीं होता । वस्तुत: उसके मूल में कोई न कोई मनोग्रंथि कारणभूत होती है ।

जगदीशचन्द्र कृत 'धरती धन न अपना' में मिस्त्री संतासिंह जो काली का मकान बनाने के लिए आया है, एक स्थान पर कहता है कि "मुझे नन्दसिंह ने बताया था कि काली और निकू में झगड़ा हो गया है । उस समय मुझे समझ में नहीं आया कि तेरा नाम ही काली है । सच्ची बात पूछो तो गाँव में कुत्तों और चमारों की पहचान रखना मुश्किल है । आते जाते रहते है न ।"[५]

यहाँ संतासिंह का उद्देश्य काली का अपमान करना कतई नहीं है और प्रकटतया ऐसा प्रतीत होता है कि संतासिंह यह अप्रत्याशित रूप से बोल गया है । अचानक बोल गया है । या कहिये गलती से बोल गया है, क्योंकि काली चमार है और एक चमार के सामने उसकी तुलना कुत्ते से करना अनुचित नहीं है और संतासिंह अपने बेध्यानपने में ही ऐसा कह गया है । परन्तु मनोवैज्ञानिकों

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

का कहना है कि कोई भी बात अचानक या अप्रत्याशित नहीं होती है । उसके पीछे कोई-न-कोई मनोग्रंथिगत कारण अवश्य होता है । परन्तु पिछड़ी जातियों में भी ऊँच-नीच का जो सोपानीकरण - संस्तरण (Hierarchy) है ; उसके तहत संतासिंह स्वयं को ऊँची जाति का समझता है । संतासिंह में यह जातिगत लघुताग्रंथि (inferiority complex) है जिसके कारण ही वह काली का इस प्रकार अपमान करता है ।

इसी उपन्यास में छज्जूशाह काली की उपस्थिति में ही कहता है - "अगर सरदार और चौधरी लोग खर्च नहीं करेंगे तो क्या कुम्हार और चमार करेंगे ।"[६]

यहाँ पर भी छज्जूशाह के मुँह से यह बात अचानक निकल जाती है, क्योंकि छज्जूशाह तो काली की इज्जत करता है । दूसरे चमारों की तुलना में काली आर्थिक दृष्टया अधिक सम्पन्न है । छज्जूशाह बनिया है । अत: वह काली का सम्मान करता है । फिर भी उसके मुँह से यह बात जो निकल जाती है उसके पीछे उसमें जो जातिगत प्रभुत्व ग्रंथि (superiority complex) है वह कारणभूत है । छज्जूशाह का चेतनमन (conscious mind) तो काली की इज्जत करता है और काली के सम्मुख कोई ऐसी-वैसी बात न निकल जाय उसका ध्यान रखता है । परन्तु उसके अचेतन मन (unconscious mind) में जो जातिगत ग्रंथि पड़ी हुई है उसके कारण उपर्युक्त बात उसके मुँह से अचानक निकल जाती है ।

कहने का अभिप्राय यह कि मानव जीवन के व्यवहार पर मनोजगत की इन ग्रंथियों का गहरा प्रभाव होता है । हमें पता भी नहीं चले इस प्रकार ये ग्रंथियाँ हमें नचाती हैं । हम तो यही समझते हैं कि हम गलती से ऐसा कर गए, किन्तु मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख गलती (error) जैसी कोई चीज नहीं है । उनका तो

यह दृढ़ विश्वास है कि मानव का प्रत्येक व्यवहार, यहाँ तक कि स्वप्नगत व्यवहार भी उसके अचेतन में अवस्थित मनोग्रंथियों से परिचालित होता है ।

४:०३:०० विविध प्रकार की मनोवैज्ञानिक ग्रंथियाँ :

ऊपर जिन मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों का उल्लेख किया गया है वे विविध प्रकार की कुंठाओं के परिणाम हैं । जातिगत कुंठा, अर्थगत कुंठा, यौनगत कुंठा यों कई प्रकार की कुंठाएँ होती हैं जिनसे इन मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों का निर्माण होता है । प्राय: देखा गया है कि अर्थाभाव से पीड़ित व्यक्ति हमेशा कुछ दबा हुआ-सा रहता है । वह अपनी बात खुल कर नहीं कह पाता । उसके सोचने के ढंग में भी एक प्रकार की विशृंखलता होती है । ये सब आर्थिक कुंठा से उत्पन्न लघुता-ग्रंथि के कारण होता है । आर्थिक कुंठा की भाँति जातिगत कुंठा भी होती है । कई निम्नजाति के लोग कई बार ऐसी 'सरनेम' धारण कर लेते हैं जो प्राय: ऊँची जातियों में पायी जाती हैं । उनका यह व्यवहार जातिगत कुंठा से उत्पन्न ग्रंथि से होता है । यहाँ हमारा उपक्रम इस प्रकार की कुछ ग्रंथियों पर बहुत संक्षेप में विचार करने का रहेगा, क्योंकि इसी अध्याय में हम इन ग्रंथियों के कारण औपन्यासिक पात्रों का व्यवहार कैसे परिचालित होता हे यही देखने का है ।

४:०३:०१ लघुताग्रंथि (Inferiority Complex)

'लघुता' शब्द से ही ज्ञापित होता है कि इस ग्रंथि से पीड़ित व्यक्ति स्वयं को लघु या छोटा महसूस करता है । जातिगत, अर्थगत तथा आयुगत कुंठाओं के कारण यह ग्रंथि विकसित होती है । प्राय: छोटी जातियों के लोगों में यह ग्रंथि पायी जाती है । गरीब लोगों में ही यह ग्रंथि मिलती है । यदि स्त्री-पुरुष की आयु में अधिक अंतर होता है तो और पुरुष की आयु स्त्री की आयु

से अधिक होती है तो ऐसे पुरुष में भी लघुताग्रंथि पायी जाती है । लघुताग्रंथि के कारण व्यक्ति हमेशा प्रतिपक्ष के सामने बराबरी का व्यवहार नहीं कर पाता। वह हमेशा उसके सामने स्वयं को छोटा महसूस करता है । इस लघुताग्रंथि के कारण कई बार व्यक्ति में प्रदर्शनवृत्ति (showmanship) भी पायी जाती है । ऐसा व्यक्ति कई बार अपनी हैसियत से ज्यादा व्यवहार करता है ।

४:०३:०२ प्रभुत्वग्रंथि (Superiority Complex)

यह लघुताग्रंथि का विलोम है । इस ग्रंथि से पीड़ित व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ समझता है । अपने सामने वह किसी को गिनता नहीं है । ऐसे व्यक्ति में अहंकार की भावना पायी जाती है । यदि हम अपने पौराणिक पात्रों पर एक दृष्टि करें तो रावण, दुर्योधन, शिशुपाल इत्यादि पात्रों में हमें यही ग्रंथि मिलती है । यदि निकट अतीत को देखा जाय तो हिटलर, मुसोलिनी जैसे नाजीवादी और फासीवादी लोगों में यह प्रवृत्ति देखी जा सकती है । इन लोगों को अपनी रक्त-शुद्धता और कुलीनता का अभिमान होता है, अपनी संपत्ति और धनशक्ति का अभिमान होता है । वस्तुतः इन्हीं कारणों से वे अपने को श्रेष्ठ समझते हैं और ऐसे श्रेष्ठता के ख्यालों में खोये रहकर दूसरों को प्रताड़ित करते रहते हैं ।

४:०३:०३ बद्धत्वग्रंथि (Fixation Complex)

इस ग्रंथि में व्यक्ति को किसी के प्रति बद्धत्व हो जाता है । जिस व्यक्ति का बद्धत्व होता है उस व्यक्ति को वह अपना आदर्श मान लेता है । वह व्यक्ति ही उसकी दृष्टि में श्रेष्ठ होता है । कोई किसी को श्रेष्ठ माने उसमें बुराई नहीं है, बल्कि दूसरों को श्रेष्ठ मानने से व्यक्ति को लाभ ही होता है । कम से कम वह अहंकार और अभिमान जैसे भावों से दूर रह सकता है । अतः किसी को उत्तम, श्रेष्ठ या आदर्श मानना बुरी बात नहीं है, किन्तु वह बुरी बात तब हो जाती है

जब ग्रंथि के रूप में वह परिणत होती है। दूसरा श्रेष्ठतम है, कोई बात नहीं परन्तु उस व्यक्ति को श्रेष्ठ मानने के कारण अन्य लोगों को कमतर मानना उसमें बुराई है। यही बात यदि देश, जाति, राष्ट्र या संस्कृति के संदर्भ में होती है तो उसी को 'फासीजम' कहा जाता है। हमें अपने धर्म और संस्कृति का गर्व हो, हम उसे अच्छा समझें, यहाँ तक तो ठीक है किन्तु हमारा धर्म ही श्रेष्ठ है, हमारी संस्कृति ही महान है और दूसरे धर्मों के लोग और उनकी संस्कृतियाँ हमसे कमतर हैं, इसे ही फासीज़म कहा जाएगा। बद्धत्व और फासीज़म में अंतर यह है कि फासीज़म में हमारा दुराग्रह किसी देश, जाति या संस्कृति के संदर्भ में होता है। बद्धत्व में यह दुराग्रह या पूर्वाग्रह किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित हो जाता है। सामान्यतया यह बद्धत्व तीन प्रकार का होता है - (अ) मातृबद्धत्व (Mother fixation) (ब) पितृबद्धत्व (Father fixation) (क) अन्य बद्धत्व (fixation of someone else)।

(अ) मातृबद्धत्व (Mother Fixation)

मातृबद्धत्व प्राय: लड़को में पाया जाता हैं। ऐसे लड़के अपनी माँ को दुनिया की सर्वगुण सम्पन्न स्त्री समझते हैं। माता के प्रति आदर होना, श्रद्धा होना, भक्तिभाव होना अच्छी बात है परन्तु ग्रंथि वह तब बनती है जब हम अपनी माँ के सामने किसी अन्य स्त्री को कुछ भी न समझें, बल्कि दूसरी स्त्रियों के अच्छे गुणों को भी हम न देखें या उनके अच्छे गुणों को भी हम बुरे रूप में देखें। ऐसे लड़कों के लिए ठेठ गुजराती में एक अच्छा शब्द मिलता है - 'मावडिया'। ऐसे लोगों के जीवन में समस्या तब आती है जब माँ को छोड़कर उन्हें कहीं अलग रहना पड़ता है या फिर उनका विवाह हो जाता है। विवाह होने पर एक दूसरी स्त्री से उसका सम्बन्ध होता है। ऐसे में यदि वह व्यक्ति, जिसमें मातृबद्धत्व है, केवल अपनी ही माँ की बात करता रहता है या हर बात

में अपनी माँ को बीच में लाता है तो पत्नी कुछ दिन तो कदाचित् बर्दाश्त कर लेगी परन्तु शनै:शनै: उसकी प्रतिक्रिया कटु से कटुतर होती जाएगी ।

(ब) पितृबद्धत्व ग्रंथि (Father Fixation)

यह ग्रंथि प्राय: लडकियों में पायी जाती है । इस ग्रंथि से युक्त लड़की अपने पिता को ही दुनिया का आदर्श व्यक्ति मान बैठती है । वह अपने पिता के व्यक्तित्व से इतनी अभिभूत रहती है कि जीवनसाथी के रूप में भी वह पिता के समान दिखनेवाले, व्यवहार करनेवाले व्यक्ति का वरण करती है जो समस्या लड़के के जीवन में आती है वैसी ही समस्या लड़की के जीवन में तभी उपस्थित होगी जब उसका विवाह होगा और वह एक अन्य व्यक्ति से संबद्ध होगी ।

(क) अन्य बद्धत्व ग्रंथि (Fixation of someone else)

ऊपर जिस बद्धत्व का उल्लेख किया गया है वह माता-पिता के संदर्भ में हो, यह आवश्यक नहीं है किसी अन्य व्यक्ति का बद्धत्व भी हो सकता है । भाई का, बहन का, चाचा, ताऊ, दादा का या चाची, ताई, दादी किसी का भी हो सकता है । कई बार जिस परिवार में दो तीन लड़कियाँ होती हैं वहाँ बड़ी लड़की का विवाह होने पर छोटी लड़कियों को अपने जीजाजी के प्रति बद्धत्व भाव रहता है । उसके कारण भी बाद में उनके जीवन में मनोवैज्ञानिक समस्याएँ आ सकती हैं । क्योंकि जिससे उनका विवाह होगा वे व्यक्ति यदि उनके बद्धत्व-पात्र के अनुरूप न निकले तो उस स्थिति में उनके जीवन में कलह या क्लेश उत्पन्न हो सकता है । आजकल यह बद्धत्व कलाकारों, खिलाड़ियों, अभिनेताओं, अभिनेत्रियों के संदर्भ में भी पाया जाता है । कॉलेज या युनिवर्सिटी के प्राध्यापकों में अपने विषय के किसी सुप्रसिद्ध विद्वान का बद्धत्व हो सकता है । युवा-पीढी के लोगों में कलाकारों और खिलाड़ियों का बद्धत्व पाया जाता है ।

इस प्रकार कोई व्यक्ति किसी को अच्छी लगे उसमें बुराई नहीं है, उसको ग्रंथि भी नहीं कहा जा सकता किन्तु वही बात हमारे दिलो दिमाग पर चस्पां हो जाए और उसके कारण हम दूसरे लोगों की अच्छाइयों को भी बुराइयाँ बताने पर तुल जाएँ तब उसे बद्धत्व ग्रंथि (Fixation Complex) कहते हैं ।

४:०३:०४ इलेक्ट्रा ग्रंथि (Electra Complex)

यह ग्रंथि लड़कियों में पायी जाती है । साधारणतया लड़कियों की रूझान अपने-अपने पिताओं की ओर होती है । प्रकृत्या लड़की माता की अपेक्षा पिता को अधिक चाहती है । समलिंगी होने के कारण पिता की तुलना में माता के वह अधिक समीप हो, अधिक खुली हुई हो, यह हो सकता है । किन्तु झुकाव उसका पिता की ओर होता है । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसे मानव-चेतना के विकास की साधारण (Normal) अवस्था कह सकते हैं । किन्तु किसी लड़की के जीवन में पिता के संदर्भ में कोई अघटित घटना घटती है तो इस साधरण अवस्था का विस्थापन (displacement) हो जाता है । प्रेम की अपेक्षा वह अपने पिता को शंका, घृणा, तिरस्कार या धिक्कार की दृष्टि से देखने लगती है । ऐसी अवस्था में अपने पिता को लेकर उसमें जो ग्रंथि पैदा होती हे उसे इलेक्ट्रा ग्रंथि कहते हैं । उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका ?' में पहले पितृबद्धत्व ग्रंथि (Father Fixation) पायी जाती है, किन्तु बाद में जब उसके पिता एक अन्य महिला से पुनर्विवाह कर लेते हैं तब उसमें इलेक्ट्रा कॉम्पलेक्स पैदा होती है ।

४:०३:०५ इडीपस ग्रंथि

यह इलेक्ट्रा ग्रंथि का विलोभ है । यह ग्रंथि लड़कों में पायी जाती है । साधारणतया लड़का अपनी माँ को विशेषत: चाहता है यह मानव चेतना की एक

साधारण (Normal) स्थिति है । बाह्य जीवन व्यवहारों में अधिक समय साथ रहने के कारण लड़का पिता के अधिक समीप हो या उसका अधिकांश समय पिता के साथ व्यतीत होता हो ऐसा हो सकता है, किन्तु साधारण स्थितियों में पिता की तुलना में वह अपनी माँ को ही अधिक चाहता है । जहाँ तक जीवन के अंतरंग प्रश्नों या समस्याओं की बात होती है, वहाँ भी लैंगिक समस्याओं को छोडकर अन्य समस्याओं में वह माँ के समक्ष ही अधिक खुलता है । यह लड़कियों के व्यवहार से कुछ विपरीत है । जैसा कि ऊपर कहा गया है लड़कियां पिता को अधिक चाहते हुए भी जीवनगत समस्याओं में माँ के समक्ष अधिक खुलती हैं । लड़कों के संदर्भ में ऐसा नहीं है, वे माँ को चाहते भी ज्यादा है और अपनी अंतरंग समस्याओं की प्रस्तुति भी माँ के सामने ही अधिक करते हैं । परन्तु यदि किसी व्यक्ति के जीवन में माता के संदर्भ में कोई अघटित घटना घटती है तो वह अपनी माता को धिक्कारने लगता है । रामायण में भरत जो अपनी माँ को धिक्कारता है उसके पीछे यही मनोग्रंथि काम करती है । ऐसी अवस्था में कई बार ऐसा भी होता है कि माँ को धिक्कारने की प्रक्रिया में वह समग्र स्त्री जाति को धिक्कारने लगता है । 'प्रेत और छाया' (इलाचन्द्र जोशी) के पारसनाथ में हमें यह प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है ।

४:०३:०६ फोबिया ग्रंथि :

सामान्य तौर पर देखा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी प्राणी या जीवजंतु का डर या भय होता है । प्राय: देखा गया है कि कुछ लोग साँप, बिच्छू या छिपकली से डरते हैं । कुछ लोग कुत्तों और बिल्लियों से भी डरते हैं । यह डर या भय जब तक साधारण स्तर पर रहता है तब तक उसे ग्रंथि नहीं कहते, किन्तु यह डर जब असाधारणता की सीमाओं को छूता है तब उसका शुमार (गिनती) ग्रंथि में होता है और उस ग्रंथि को फोबिया कहा गया

है । यदि कोई छिपकली से डरता है और बेशुमार डरता है तो उसे छिपकली का फोबिया है ऐसा कह सकते हैं । संडास, नालियों और मोरियों में कोकरोज पाये जाते हैं । ये कोकरोज गंदे और घिनौने लग सकते हैं । उनसे किसी को वितृष्णा भी हो सकती है, किन्तु कई लोगों को उनसे डर भी लगता है । कोकरोज को देखते ही उनका व्यवहार असाधारण (abnormal) हो जाता है । ऐसी स्थिति में उसको कॉकरोज-फोबिया कहते है । फोबिया ग्रंथि से पीडित व्यक्ति, उसे जिस वस्तु से फोबिया होता है उसको देखते ही abnormal व्यवहार करने लगता है । कई-कई लोगों में तो यह फोबिया ग्रंथि इतनी मजबूत होती हे कि वे उसका चित्र तक नहीं देख सकते, या उसको सिनेमा या टी.वी. के स्क्रीन पर भी नहीं देख सकते । ऐसे लोग सामान्य स्थितियों में बहुत ही साधारण (normal) और सहज होते हैं, किन्तु उस वस्तु के सामने पड़ते ही उनका व्यवहार abnormal हो जाता है । ऐसी स्थिति में उनकी सूझ-बूझ खत्म हो जाती है । सोचने-विचारने की शक्ति नष्ट हो जाती है । कई बार तो वे छोटे बच्चों का-सा व्यवहार करते हैं ।

४:०३:०७ यौन ग्रंथियाँ

यदि व्यक्ति का विकास सामान्य तौर पर होता है तो उसमें किसी प्रकार की ग्रंथि का निर्माण नहीं होता, किन्तु यदि किसी व्यक्ति के जीवन में कुछ अघटित-सा घट जाता है तब उसमें ग्रंथियों का निर्माण होता है । मनुष्य के जीवन में यौन (Sex) का भी अपरिहार्य महत्व है । यदि व्यक्ति का ग्रोथ (growth) साधारण (normal) स्थितियों में होता है तो उसके यौन-जीवन में किसी ग्रंथि का निर्माण नहीं होता । परन्तु किसी का यौन-जीवन अघटित या हादसे से गुजरता है तो उसमें यौनग्रंथि के कारण उस व्यक्ति का जीवन साधारण या सहज नहीं रह पाता । यदि किसी बालिका के साथ शैशव अवस्था में नृशंस

या बर्बर बलात्कार होता है तो ऐसी बालिका युवा होने पर भी यौन ग्रंथियों से पीड़ित रहती है और उसका यौन-जीवन असाधारण (abnormal) हो जाता है। इस ग्रंथि के कारण यौन-जीवन के प्रति उसे वितृष्णा होने लगती है और फलत: वह एक 'ठंडी औरत' (Frigid Woman) हो जाती है। ठीक उसी प्रकार कोई लड़की या लड़का अपने माता-पिता के संदर्भ में कोई घृणित बात सुनता है तो उसके मन में यौन-ग्रंथि पैदा हो सकती है। अपने प्रिय पात्र की किसी आघातजनक घृणित घटना से आहत होकर भी व्यक्ति में यौन ग्रंथि निर्मित हो सकती है। जो लोग आपराधिक जगत से जुड़े हुए होते है, उनको किसी को बलात्कृत करने में ही आनंद की उपलब्धि होती है। सामान्य स्थिति में वे यौन जीवन का आनंद नहीं उठा सकते।

आधुनिक यौन मनोवैज्ञानिकों ने Bondage यौनग्रंथि पर पर्याप्त विचार किया है। इस यौन-ग्रंथि से पीड़ित व्यक्ति को सामान्य स्थितियों में यौन आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती। ऐसी व्यक्ति चाहती है कि उसे खूब पीड़ित किया जाय, सताया जाय, मारा-पीटा जाय, शारीरिक क्षति पहुँचायी जाय। उसे नाना प्रकार की यंत्रणाएँ दी जाए। ऐसा व्यक्ति स्वयं को दूसरों की दया या कृपा पर अपने को छोड़ देता है या कम से कम ऐसा समझने में उसे एक विशेष प्रकार के सुख की अनुभूति होती है। साधारण तौर पर स्त्री-पुरुष के यौन-सम्बन्धों में एक दूसरे को थोड़ी बहुत पीड़ा या दर्द पहुँचाने की प्रवृत्ति रहती है। यह प्रवृत्ति जब तक साधारणता की कोटि में रहती है तब तक उसे Bondage नहीं कह सकते। इसकी गणना तो एक सुखद या मधुर या मीठे दर्द के रूप में की जा सकती है जिसे हर व्यक्ति चाहता है। परंतु उसे ग्रंथि तब समझा जाएगा जब पीड़ित होने की प्रवृत्ति अतिशयता की सीमा को पार करती हो। यौन मनोवैज्ञानिक Crafft Ebbing इस संदर्भ में लिखते है -"The essentional feature of Bondage is the inability to escape, to resist the aggressor

- to have to submit whether one wants to or not. In very many cases this submission will be fantasy and not actual fact, but the stimulation felt by the imagined simuation will be just as vivid, this desire to over come and control one's vicim by straps and chains, loopes and cards is very often not associated with any conscious element of real sadism. The aggressor wants the victim completely at his or her mercy, although this may be symbolic - as where actual words or straps are used and yet it would be a trivid task for the victim to free himself or herself.''[७] अत: कहा जा सकता है कि Bondage से पीड़ित व्यक्ति को यंत्रणापूर्ण संभोग में ही आनंद की अनुभूति होती है । सामान्य स्थितियों में उसे संतुष्टि नहीं होती । यह प्रवृत्ति अधिकांशत: स्त्रियों में पायी जाती है, किन्तु कभी-कभी कुछ पुरुष भी इसके अभ्यस्त होते हैं । आदिम जातियों में यह प्राय: देखा गया है कि स्त्रियाँ ऐसे पुरुषों को नापसंद करती हैं जो उसके साथ नर्मी से पेश आते हैं । वे पुरुष द्वारा प्रताड़ित होने में ही जातीय जीवन के सुख का अनुभव करती है । इसे Bondage का हल्का स्वरूप कहा जा सकता है ।

इसी प्रकार की एक दूसरी यौन ग्रंथि है - Transvestism इसमें व्यक्ति को यौन संतुष्टि तब होती है जब वह विलोमी लिंग का परिधान करती है अर्थात् पुरुष स्त्री जैसे कपड़ों का परिधान करें और स्त्री पुरुष जैसे कपड़ों का परिधान करें । ऐसे स्थिति में ही उनको यौन आनंद प्राप्त होता है । इस संदर्भ में कहा गया है -

''Transvestism may be defined as the wearing of clothes belonging to the opposite sex for the purpose of sexual satisfaction.

Transevestims is linked in many people's minds with homosexuality. In fact, there is no association between the two, and a transvestite will not necessarily have any homosexual leanings"[८] अर्थात् transvestism ग्रंथियुक्त व्यक्ति सामान्य स्थितियों में जातीय जीवन का आनंद नहीं उठा सकता । उसे opposite sex के वस्त्रों को धारण करने पर ही आनंद की प्राप्ति होती है । कुछ लोग उसे समलैंगिकता से जोड़ते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है । यहाँ तो दोनों व्यक्ति परस्पर opposite sex के कपड़े पहनते हैं । कदाचित उसमें अपने 'अहं' या 'मैं' को विसर्जित करने की प्रवृत्ति होती है । वे एक प्रकार की परिकल्पना Fentasy में राचते हैं कि पुरुष स्त्री हो गया है और स्त्री पुरुष । यह एक प्रकार की फेन्टसी है या उसे प्रेमक्रीडा love-game भी कह सकते हैं । यौन जीवन में वैविध्य लाने के लिए यदि कोई दम्पती ऐसा करें तो उसकी गिनती यौन ग्रंथि में नहीं होती वह यौन ग्रंथि तब बनती है जब ऐसा करने पर ही यौन आनंद की प्राप्ति हो अन्य स्थितियों में नहीं ।

इस प्रकार यौन ग्रंथियों का क्षेत्र बड़ा ही विस्तृत है । इसे लेकर तो मनोविज्ञान की एक अलग प्रशाखा विकसित हुई है । जिसे यौन मनोविज्ञान (sex psychology) कहा जाता है ।

४:०३:०८ सादवादी और मासोकवादी ग्रंथि

सादवादी ग्रंथि को अंग्रेजी में saddist कहते है । जो लोग इस ग्रंथि से पीड़ित होते हैं उनको दूसरों को पीड़ा देने में आनंदानुभूति होती है । ऐसे लोग अकारण भी दूसरों को पीड़ित करते हैं । दूसरों को दु:ख और कष्ट देखकर वे आनंदित होते हैं । मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि पुरुष प्रकृत्या थोडा बहुत saddist होता है । थोडा बहुत saddist होना एक बात है, परन्तु जब इस प्रवृत्ति का अतिरेक हो जाता है तब उसकी गणना ग़ंथि के अंतर्गत होती है ।

सादवाद का विलोम है मासोकवाद । इस ग्रंथि से युक्त व्यक्तियों को अंग्रेजी में 'machoist' कहते हैं । सादवादी लोगों को दूसरों को पीड़ित करने में आनंद आता है । इसके विपरित मासोकवादी लोग पीड़ित होने में आनंद का अनुभव करते हैं । ये लोग दूसरों का भी दु:ख दर्द अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं । ऐसे लोगों के लिए हिन्दी में कहावत है - ''काजीजी क्यों दूबले, पूरे गाँव की फिकर ।'' मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि स्त्री प्रकृत्या मासोकवादी होती है । सादवादी को परपीड़क और मासोकवादी को आत्मपीड़क भी कह सकते है । मासोकवादी लोग इस बात में विश्वास रखते हैं कि दूसरों को कष्ट देने की अपेक्षा स्वयं कष्ट भोग लेना अच्छा होता है । इस प्रवृत्ति का अतिरेक मासोकवादी ग्रंथि का निर्माण करता है ।

पूर्ववर्ती पृष्ठों में जिन मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों का उल्लेख और विवेचन किया गया है, आलोच्य उपन्यासों में ऊपर निर्दिष्ट ग्रंथियाँ किन-किन पात्रों में पायी जाती है यह दिखाने का उपक्रम यहाँ किया गया है ।

४:०४:०१ लघुता ग्रंथि (Inferiority Complex)

ऊपर निर्दिष्ट किया गया है कि इस ग्रंथि से पीडित व्यक्ति अपने को हेय या निम्न कक्षा का समझता है । दूसरों की तुलना में उसमें कोई कमी है यह बात उसे सदैव पीड़ित करती है । उर्दू में उसे 'अहसासे कमतरी' कहते हैं । यह लधुता ग्रंथि कई कारणों से व्यक्ति में पैदा होती है ।

राजेन्द्र यादव कृत उपन्यास 'अनदेखे अनजान पुल' की नायिका निन्नी में लघुता ग्रंथि का कारण उसकी कुरूपता है । कुरूपता के कारण लड़के उसके प्रति आकर्षित नहीं होते हैं । इस बात का उसे हमेशा दु:ख रहता है । सामाजिक समारोहों में अपनी समवयस्का सुन्दर सहेलियों को देखकर वह निरंतर जलती,

भुनती और कुढ़ती रहती है । इसका असर उसके व्यक्तित्व पर भी पड़ता है । उसके कारण उसमें यौन विकृतियाँ भी जन्म लेती हैं । अपने भाई के मित्र दर्शन की सच्ची सहानुभूति और संवेदना पाकर वह इस लघुता ग्रंथि से मुक्ति पाती है । मनोवैज्ञानिक एडलर का सिद्धान्त है - ''क्षतिपूर्ति का सिद्धान्त''। एडलर के अनुसार व्यक्ति यदि अपनी क्षति को पहचान लेता है तो किसी अन्य क्षेत्र में नामवरी हाँसिल करके उस क्षति की पूर्ति कर लेता है । यदि ऐसा हो जाता है तो व्यक्ति लघुताग्रंथि से मुक्त हो जाती है । प्रस्तुत उपन्यास की नायिका निन्नी लघुता ग्रंथि प्राप्त करने में सफल होती है । वह अपनी कुरूपता की पूर्ति बुद्धि की कुशाग्रता द्वारा पूरी कर लेती है । I.A.S. करके वह भारत सरकार के किसी उच्च पद पर आसीन हो जाती है । यहाँ निन्नी की तो मुक्ति हो जाती हैं पर संसार में कई ऐसे लोग होते हैं जो ताजिन्दगी लघुता ग्रंथि से पीड़ित रहते हैं ।''

शिवानी कृत उपन्यास 'कृष्णकली' में लघुताग्रंथि का कारण उसके जन्म के इतिहास से जुड़ा हुआ होता है । पन्ना और विद्युतरंजन को एकान्त में बात करते हुए कली सुन लेती है । तब उसे प्रथम बार यह ज्ञात होता है कि पन्ना उसकी सगी माँ नहीं है । उसका जन्म तो अलमोड़ा के कुष्ठाश्रम में हुआ था । वह पार्वती नामक कुष्ठ रोग से पीड़ित एक स्त्री और उसके मुसलमान प्रेमी की संतान है । जन्म के इस कलुषित इतिहास के कारण कली की जीवन धुरी ही गड़बड़ा जाती है । वह कोन्वेण्ट से भाग जाती है और वहाँ से उसके जीवन की भटकन शुरू होती है ।

मोहन राकेश द्वारा प्रणीत 'अंधेरे बन्द कमरे' का हरबंस भी लघुताग्रंथि से पीड़ित है । उसे बराबर यह लगा रहता है कि उसकी पत्नी नीलिमा उससे अधिक प्रतिभाशाली है और उसके मित्रों में उसकी चर्चा उसके अपने व्यक्तित्व

के कारण नहीं, अपितु नीलिमा के पति के रूप में होती है, यह बात उसे खटकती रहती है । एक स्थान पर नीलिमा हरबंस से कहती है - ''तुम सिर्फ हीन-भावना के शिकार हो कि लोग मुझे तुमसे ज्यादा मानते है और उनमें जो बात होती है वह तुम्हारे विषय में न होकर मेरे विषय में होती है । तुम्हें यह बात खा जाती है कि लोग तुम्हारी चर्चा नीलिमा के पति के रूप में करते हैं । तुम्हें डर लगता है कि अगर मेरा प्रदर्शन सफल हुआ, तो लोग मुझे और ज्यादा जानने लगेंगे और तुम अपने को और छोटा महसूस करोगे ।''[९] हरबन्स की यह समस्या बिल्कुल वही समस्या है जो फिल्म 'अभिमान' की थी । लघुताग्रंथि के कारण हरबंस नीलिमा को संगीत, नृत्य, पैण्टिंग आदि कलाओं की ओर अग्रसरित होने के लिए प्रेरित तो करती हैं, किन्तु जैसे ही नीलिमा उन कलाओं में दक्षता प्राप्त करने लगती है हरबंस अपना हाथ खींच लेता है । इस लघुताग्रंथि के कारण हरबंस नीलिमा का दाम्पत्य जीवन गड़बड़ा जाता है ।

महेरुन्निसा परवेज़ के उपन्यास 'आँखोंकी दहलीज' की नायिका तालिया सुन्दर, स्वस्थ और संस्कारी है । किन्तु उसमें लघुताग्रंथि का निर्माण एक दूसरे कारण से होता है । विवाह के कई वर्षों के बाद भी उसकी गोद हरी नहीं होती है । मुस्लिम समाज में जब किसी स्त्री पर 'बाँझ' का लेबल लग जाता है तो उसका जीवन एक विभीषिका बन जाता है । लेखिका मेहरुन्निसा परवेज़ स्वयं इन स्थितियों से गुजरी है । अत: अपनी केफियत में उन्होंने लिखा है - ''तालिया जो भोग रही है, वह मेरा दु:ख है क्योंकि उन दिनों मेरा नाम भी बाँझ औरतों की लिस्ट में था । मैंने उस दु:ख को अक्षरों का लिबास ओढ़ा दिया । मेरी भी शादी के दस वर्ष बीत गये थे और मैं माँ न बन पायी थी । कसूर चाहे किसी का भी रहा हो कलंक तो औरत के माथे पर ही होता है न । दु:ख भी वही झेलती है, सहती भी वही है ।''[१०] अत: तालिया को जब पता चलता है कि उसमें माँ बनने की क्षमता नहीं है । तब अपनी इस शारीरिक कमी के कारण

उसमें लधुताग्रंथि का निर्माण होता है । तालिया की माँ चाहती है कि तालिया किसी भी तरह माँ बने । अत: वह एक योजना बनाती है जिसके तहत् तालिया के शारीरिक सम्बन्ध जावेद नामक एक युवक से होते हैं । जीवन की किन्हीं कमजोर क्षणों में तालिया जावेद से शारीरिक सम्बन्ध तो जोड़ लेती है परन्तु उसके कारण ही वह अपराध बोध से ग्रसित हो जाती है और उसके कारण उसकी हीनताग्रंथि और भी बढ़ जाती है । यहाँ तक कि इस हीनताबोध के कारण वह आत्महत्या का प्रयास भी करती है ।

जगदीशचन्द्र कृत उपन्यास 'धरती धन न अपना' के नायक काली में भी लघुताग्रंथि दृष्टिगोचर होती है । काली की लघुताग्रंथि के पीछे उसकी जातिगत कुण्ठा है । काली चमार जाति का है । चमारों की गणना छोटी जातियों में होती है और उस जाति के लोगों के साथ उच्च जाति के लोग बड़ा ही अपमानजनक व्यवहार करने लगते है । 'धरती धन न अपना' में पंजाब के होशियारपुर जिले के 'घोड़ेवाहा' नामक गाँव को लिया गया है । 'घोड़ेवाहा' में चौधरी लोग जो जमींदार है, उनकी तूती बोलती है । छोटी जाति के लोगों के साथ वे पशुवत व्यवहार करते हैं । लेखक ने अपनी कैफियत में बताया है कि गाँव के एक चमार की पिटाई इसीलिए होती है कि वह शहर से साइकल लाकर घण्टी बजाता हुआ गाँव में प्रवेश कर रहा था । काली ने अपने शैशव में ऐसे अनेक अपमान सहन किये थे । अपमानों की इंतिहां हो जाने पर वह घोड़ेवाहा से भाग जाता है । किसी शहर से जाकर अच्छी खासी रकम कमाकर कुछ वर्षों के बाद जब वह गाँव लौटता है तो अपनी सारी जमा पूंजी पक्का मकान बनवाने के पीछे खर्च कर डालता है । मकान बनाने का विचार उसके लिए एक प्रकार से 'status symbol' बन जाता है । उसके पीछे हीनताबोध की भावना ही है । गाँव के चौधरियों को वह दिखा देना चाहता है । यह 'दिखा देने की भावना' के पीछे काली की लघुताग्रंथि ही कारणभूत है । काली के

स्थान पर यदि कोई उच्च जाति का युवक होता तो कमाई हुई रकम से और अधिक कमाने की चेष्टा करता और सारी कमाई मकान बनाने जैसे अनुत्पादक कार्य (Non productive) में न फूंक देता । वह मकान तब बनाता जब उसकी हैसियत उस प्रकार की होती । पिछड़ी जाति के लोग अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च करते हैं उसके पीछे उनके अचेतन मन में जो लघुताग्रंथि होती है वही है । काली में भी वही लघुताग्रंथि दृष्टिगोचर होती है । लघुताग्रंथि से पीड़ित व्यक्ति प्रतिक्रियायित होता है । काली के सारे कार्य भी प्रतिक्रिया के रूप में होते हैं ।

राजकमल चौधरी द्वारा प्रणीत 'मछली मरी हुई' का नायक निर्मल पद्मावत भी लधुता ग्रंथि से पीड़ित है । उसकी लघुताग्रंथि नपुंसकता के कारण है । निर्मल पद्मावत शारीरिक दृष्टि से हृष्टपुष्ट है । उसकी यह यौन-अक्षमता नैसर्गिक नहीं, मनोवैज्ञानिक है । नपुंसकता दो प्रकार की होती है - नैसर्गिक या कुदरती (Natural) और मनोवैज्ञानिक (psychological) । निर्मल पद्मावत की नपुंसकता दूसरे प्रकार की है । एक विशेष परिस्थिति में भयाक्रान्त होने के कारण कल्याणी के सम्मुख वह यौन-दृष्टि से अक्षम हो जाता है । वस्तुत: उसकी यह यौन-अक्षमता क्षणिक थी, सामायिक थी । उस समय कल्याणी यदि प्रेम और सहानुभूति से काम लेती तो यह नौबत नहीं आती । किन्तु कल्याणी उसका तिरस्कार करती है, उसकी तुलना नरक के कीड़े से करती है । लेखक ने इस घटना का सांकेतिक वर्णन इस प्रकार किया है - ''दो-तीन मिनट बाद कल्याणी ने पट्टियाँ छोड़ दीं और अचानक निगाहें घुटनों के बल उठते हुए निर्मल की ओर गई । निर्मल बर्फ के टुकडे की तरह ठंडा हो चुका था । मर चुका था । आँखों के अंगारें बुझ चुके थे.....तुम यही आदमी हो ? .... इतने से आदमी हो ? बस.... । इसी के लिए....इतने ही के लिए मेरे पास आये थे ? ..... छिः छिः । कल्याणी चींखने लगी ..... । फिर कभी इधर नहीं आना निर्मल । तुम आदमी नहीं हो, नरक के कीड़े हो..... मत आना कभी ।''[११] इस पर टिप्पणी करते

हुए डॉ. पारूकान्त देसाई ने लिखा है - ''यौन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्रथम संभोग में पुरुष का अधिक उत्तेजित होकर शीघ्र स्खलित होना कोई दोष या नपुंसकत्व नहीं है । दूसरे निर्मल की इस स्थिति के लिए अचानक 'स्केलेटन' को देखने से उत्पन्न उसकी मन:स्थिति भी है । अत: कल्याणी ने यदि सहानुभूति से काम लिया होता तो निर्मल फिर से तैयार हो सकता था । परन्तु कल्याणी की भर्त्सना तथा घोर तिरस्कार से निर्मल कुंठाओं का शिकार होकर अंततोगत्वा नपुंसक हो गया ।''[१२] मनोवैज्ञानिक नपुंसकता (psychological impotancy)के कारण निर्मल पद्मावत में लघुताग्रंथि का निर्माण होता है ।

भगवतीचरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास में दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर एवम् विभागाध्यक्ष डॉ. प्रभाशंकर में इस ग्रंथि का विकास उनकी उत्तरावस्था में होता है । प्रोफेसर प्रभाशंकर उम्र में पैंतालीस से भी ऊपर के है और वे बीस-बाईस साल की युवति और अपनी छात्रा रेखा भारद्वाज से विवाह करते हैं । वैवाहिक जीवन के कुछ दिन तो आनंद-प्रमोद और भावातिरेक में गुजर जाते हैं, किन्तु कुछ ही समय में रेखा अनुभव करती है कि उसकी युवकोचित वासना की प्यास प्रोफेसर से नहीं बुझ सकती । वह रात-रात भर तड़पती रहती है । फलत: उसके जीवन में एक के बाद एक कई पुरुष आते हैं - शशिकान्त, निरंजन कपूर, शिवेन्द्र धीर, मेजर यशवन्तसिंह, डॉ. योगेन्द्र मिश्र आदि । शशिकान्त डॉ. प्रभाशंकर का भूतपूर्व छात्र था । भारतीय सचिवालय में वह किसी अच्छे पद पर था । एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में रेखा और शशिकान्त होल में साथ साथ बैठे थे । स्पर्शेन्द्रिय के द्वारा उनका प्रथम परिचय होता है जो बाद में घनिष्ठता में परिवर्तित होता है । निरंजन कपूर मिसेज रतना चावला का दामाद है । मिसेज रतना चावला और प्रोफेसर प्रभाशंकर में दोस्ती है जो शारीरिक सम्बन्धों तक विकसित हुई है । मिसेज रतना चावला के कारण ही निरंजन कपूर रेखा के परिचय में आता है । मसूरी में वे खूब रंग-

राग खेलते हैं, परन्तु निरंजन का सिगरेट केस डॉ. प्रभाशंकर के तकिये के नीचे रह जाता है और उनकी चोरी पकड़ी जाती है । डॉ. प्रभाशंकर रेखा को खूब मारते-पीटते हैं और उसे अपने घर से निकाल देने की धमकी भी देते हैं, परन्तु रेखा के क्षमा याचना से पिघल जाते हैं । डॉ. प्रभाशंकर रेखा को स्वीकार तो कर लेते हैं परन्तु उस दिन से उनकी मानसिक शान्ति खत्म हो जाती है । वे भीतर ही भीतर यह महसूस करते हैं कि वे रेखा को संतुष्ट नहीं कर सकते । फलत: डॉ. प्रभाशंकर में अपनी यौन अक्षमता के कारण लघुता ग्रंथि का विकास होता है । इसके कारण उनका आत्म विश्वास खत्म हो जाता है । इसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर भी पड़ता है और अंतत: वे लकवाग्रस्त हो जाते हैं ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि लघुता ग्रंथि का निर्माण जातिगत, अर्थगत और यौनगत् कुण्ठा के कारण होता है ।

४:०४:०२ प्रभुत्व ग्रंथि (Superiority Complex)

यह ग्रंथि लघुताग्रंथि का विलोम है । इस ग्रंथि से पीड़ित व्यक्ति स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है । दूसरों को वह अपने से हेय समझता है । जैनेन्द्रकुमार द्वारा प्रणीत 'सुनीता' की सुनीता उषा प्रियंवदा कृत 'रूकोगी नहीं राधिका ?' की राधिका, जैनेन्द्रकुमार कृत मुक्तिबोध की नीलिमा, मोहन राकेश कृत 'अंधेरे बन्द कमरे' की नीलिमा, मृदुला गर्ग द्वारा प्रणित उपन्यास 'चित्तकोबरा' की मनु, मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' की शकुन, शिवानी कृत 'कृष्णकली' उपन्यास में पन्ना की बहन माणिक आदि नारी पात्रों में हम इस ग्रंथि को रेखांकित कर सकते हैं ।

राघवेन्द्र मिश्र कृत 'पानी बीच मीन पियासी' उपन्यास का नायक, जगदीशचन्द्र कृत 'धरती धन न अपना' के हरनामसिंह चौधरी, जैनेन्द्र कृत

'सुनीता' के हरिप्रसन्न, उषा प्रियंवदा कृत 'पचपन खंभे लाल दीवारें' का नील, उषा प्रियंवदा कृत 'रूकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में राधिका के पिता तथा मनीश, भगवतीचरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास में प्रोफेसर प्रभाशंकर (युवा और प्रौढ अवस्था तक), मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' का अजय, अज्ञेय कृत 'नदी के द्वीप' का भुवन, प्रभृति पुरुष पात्रों में प्रभुत्व ग्रंथि पायी जाती है ।

नारी पात्रों में प्रभुत्व ग्रंथि का कारण कुलीनता, सौंदर्य, उच्च शिक्षा द्वारा प्राप्त पद और प्रतिष्ठा आदि को रेखांकित किया जा सकता है । सुनीता (सुनीता की), राधिका (रूकोगी नहीं राधिका ? की), गरिमा (परखकी), नीलिमा (मुक्तिबोध उपन्यास की), नीलिमा (अंधेरे बन्द कमरे की) रक्तिका (सूरज मुखी अंधेरे के), मिति (टेराकोटा लक्ष्मीकांत वर्मा), मनु (चित्तकोबरा), रेखा (नदी के द्वीप), माणिक (कृष्णकली), वसुधा (तत्सम् राजी शेठ) आदि नारी पात्रों में जो प्रभुत्व ग्रंथि देखी जाती है । उसके मूल में उपर्युक्त कारणों की तलाश सहजतया की जा सकती है ।

महिलाओं में केवल रूप-सौंदर्य के कारण भी प्रभुत्व ग्रंथि का निर्माण प्राय: होता है । सुनीता, राधिका, नीलिमा (मुक्ति बोध), मनु (चित्तकोबरा), कली (कृष्णकली) कृष्णकली, प्रभृति नारी पात्रों में जो प्रभुत्व ग्रंथि पायी जाती है उसका मुख्य कारण उनका अत्यधिक रूप से सुंदर होना है । सौंदर्य अपने आप में एक मूल्य है । सौंदर्य के साथ यदि दूसरे गुण भी जुड़ जायें तो उसे सोने में सुहागा कह सकते हैं ।

आधुनिक काल में नारी ने उच्च शिक्षा प्राप्त करके अनेक शिखरों को सर किया है । उच्च शिक्षा द्वारा वह सम्मानित पदों तक पहुँच सकी है । इस पदप्रतिष्ठा के कारण उसका आत्मगौरव बढ़ा है और उसके कारण भी कहीं-कहीं उसमें प्रभुत्व ग्रंथि का निर्माण हुआ है ।

लक्ष्मीकांत वर्मा कृत 'टेराकोटा' उपन्यास की नायिका मिति आई.ए.एस. करके कलक्टर और बाद में कमिश्नर के पद तक पहुँचती है। मिति के कारण उसके पूरे परिवार का कल्याण हो जाता है। भाई-बहन पढ़-लिखकर सम्मानित पदों को प्राप्त कर लेते हैं। दो बहनों का विवाह भी वह करवाती है। इन सब कारणों से मीति के घर-परिवार वाले मिति को बहुत ही सम्मान देते हैं। हर बात में उसका ध्यान रखते हैं। कमिश्नर के नाते उसके समाज तथा प्रतिष्ठित तबके में भी उसको लोग अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। मिति सुंदर और स्मार्ट तो है ही, किन्तु इस पद-प्रतिष्ठा के कारण समाज में वह और भी प्रेम, सम्मान और आदर पाती है। अत: उसमें प्रभुत्व ग्रंथि को दृष्टिगत किया जा सकता है।

मोहन राकेश कृत 'अंधेरे बन्द कमरे' की नीलिमा भी उच्च शिक्षा प्राप्त महिला है। उच्च शिक्षा के अतिरिक्त वह संगीत, नृत्य, चित्रकला जैसी कलाओं में भी दक्षता प्राप्त कर चुकी है। अत: उसमें प्रभुत्व ग्रंथि के कहीं कहीं दर्शन होते हैं। विदेश यात्रा के बाद उसकी यह ग्रंथि और भी विकसित होती है।

मन्नू भंडारी कृत 'आप का बंटी' की शकुन भी एक कॉलेज में प्राचार्य के पद पर कार्य कर रही है। उसका यह जो स्थान है, वह 'Power and position' वाला है। उसके अंतर्गत कई लोग कार्य करते हैं। फलत: उसमें प्रभुत्व ग्रंथि पायी जाती है। इस प्रभुत्व ग्रंथि के कारण ही अजय के साथ के उसके सम्बन्ध बिगड़ते हैं और अन्तत: उनमें विवाह विच्छेद तक हो जाते हैं। इस प्रभुत्व ग्रंथि के कारण ही वह प्रत्येक मामले में अजय को नीचा दिखाना चाहती है। पहले कानूनी लड़ाई में बंटी की कस्टडी अपने पास रखती है परन्तु विवाह विच्छेद के उपरान्त अजय जब दूसरी शादी कर लेता है तब शकुन भी दो संतानों के पिता ऐसे डॉ. जोशी से विवाह कर लेती है।

जैनेन्द्रकुमार द्वारा प्रणीत 'मुक्तिबोध' उपन्यास की नीलिमा सहाय बाबू की अंगत सचिव है। वह भी उच्चतम शिक्षा प्राप्त है। नीलिमा में रूप और चातुर्य का संगम दृष्टिगत होता है। सहाय बाबू भारत सरकार में कई बार मंत्री पद को शोभित कर चुके हैं। सहाय बाबू पर नीलिमा के रूप सौंदर्य और चातुर्य का जादू खूब चलता है। इसके कारण नीलिमा में प्रभुत्वं ग्रंथि पायी जाती है। वह एक दबंग महिला है। इस प्रभुत्व ग्रंथि के कारण उसका पति उसके सामने व्यक्तित्वहीन लगता है।

जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट किया गया है पुरुषों में भी यह ग्रंथि पायी जाती है। कमलेश्वर कृत 'डाक बंगला' में मेजर सोलंकी और बतरा में यह ग्रंथि दृष्टिगत होती है। मेजर सोलंकी आर्मी में ऊँचे होदे में रह चुके है। अत: ऊँचे होदे और कुलीनता के कारण वे हमेशा उन्नतभृ दिखायी देते हैं। बतरा व्यवसायिक जगत का बादशाह है। भारत सरकार में उच्च पदों पर नौकरी करनेवाले बड़े-बड़े अफसरों की कुंडली उसके पास है। किस अफसर की क्या कमजोरी है उसे वह भलीभाँति जानता है। इस कला के कारण वह लोगों को लाइसन्स, परमीट, कोटा इत्यादि दिलाता है। इसके लिए उसने बाकायदा अद्यतन ढंग का ऑफिस खोल रखा है, जिसमें वह एक से एक सुंदर युवतियों को सेक्रेटरी के रूप में रखता है। इरा को भी वह उसी प्रकार रखता है और जब इरा अपना हक जताने लगती है या बच्चा पैदा करने की जीद करने लगती है तो बतरा उसको बड़ी सफाई से उसको वहाँ से हटा देता है।

अज्ञेय कृत 'नदी के द्वीप' का भुवन भी प्रभुत्व ग्रंथि से युक्त पुरुष है। भुवन सुदर्शन व्यक्तित्व का धनी है। वैज्ञानिक है, बुद्धिजीवी है, साथ ही अंग्रेजी साहित्य में भी उसका दखल है। इन गुणों के कारण उसमें यह ग्रंथि सहजतया पायी जाती है।

शिवानी कृत 'कृष्णकली' उपन्यास में पन्ना का प्रेमी विद्युतरंजन मजूमदार भी अपनी संपन्न उच्च स्थिति के कारण प्रभुत्वग्रंथि से युक्त है। संपन्नता और कुलीनता का अभिमान तो उसे है ही, वह एक अच्छा राजनीतिज्ञ भी है। और स्वतंत्रता के पश्चात काँग्रेस सरकार में वह कई विभागों का मंत्री रह चुका है। इसी ग्रंथि के कारण वह पन्ना की बेटी कली को स्वीकार नहीं करता। पन्ना से वह प्रेम के सम्बन्ध तो रखना चाहता है, परन्तु साथ ही साथ अपनी कुलीनता की रक्षा भी करना चाहता है। अत: उसे वह पत्नी का दर्जा कभी नहीं देता।

शशीप्रभा शास्त्री द्वारा प्रणीत 'नावें' उपन्यास का सोमजी भी प्रभुत्वग्रंथि से युक्त पुरुष है। उनका व्यक्तित्व एक साहित्यिक व्यक्तित्व है। उनकी विद्वता लोगों को, विशेषत: स्त्रियों को, आकृष्ट करती है। उपन्यास की नायिका मालती सोमजी की सहायिका है। वह कई-कई दिनों तक सोमजी के साथ व्यावसायिक प्रवासों पर रहती है। इसी उपक्रम में उसे सोमजी से गर्भ भी रहता है। सोमजी पहले तो उसे बहुत शालीनता के साथ गर्भ गिराने की सलाह देते हैं। परन्तु मालती जब उसके लिए तैयार नहीं होती तब उसे छोड़ देते हैं। सोमजी मालती को अपनी प्रेमिका के रूप में रखने को तो तैयार है, परन्तु अपनी कुलीनता में दाग नहीं पड़ने देना चाहते। अत: उसे विवाहिता का दर्जा देने के लिए वह कतई-कतई तैयार नहीं है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि रूप सौंदर्य, सम्पन्नता, कुलीनता, उच्च शिक्षा, उच्च पद, आभिजात्यता जैसे कारणों से व्यक्ति में प्रभुत्वग्रंथि का निर्माण होता है। इस ग्रंथि के कारण वह कई बार दूसरों को अन्याय कर बैठता है। इस ग्रंथि के कारण व्यक्ति का अपना वैयक्तिक जीवन भी केन्द्रच्युत हो जाता है। कई बार देखा गया है कि सामान्य स्त्री पुरुष के दाम्पत्य जीवन में कोई आंधी या तूफान नहीं आता है। वह एक सरल और सहज ढंग से व्यतीत

होता है, परन्तु स्त्री या पुरुष दोनों में से किसी एक में यह ग्रंथि होती है तो उनका दाम्पत्य जीवन खंडित होता है ।

४:०४:०३ बद्धत्वग्रंथि (Fixation Complex)

जैसा कि पहले निर्दिष्ट किया गया है, बद्धत्व ग्रंथि में उस ग्रंथि से पीड़ित व्यक्ति में किसी अन्य व्यक्ति के प्रति बद्धत्वभाव होता है । वह उस व्यक्ति को अपना आदर्श मानकर चलते हैं । नरोत्तम नागर कृत 'दिन के तारे उपन्यास' में उसके नायक को अपनी माँ का बद्धत्व है । वह अपनी माँ को ही दुनिया की सबसे ज्यादा अधिक सती-साध्वी स्त्री मानता है । स्त्रियों के सम्बन्ध में माँ ही उसका आदर्श है । उसकी दृष्टि में उसकी माँ सर्वगुण सम्पन्न है । बाल्यावस्था और शैशवावस्था में तो कोई समस्या आती नहीं है, परन्तु जब वह युवा होता है और उसका विवाह हो जाता है तब समस्याओं के प्रारंभ का सिलसिला शुरू हो जाता है । पत्नी के सम्मुख हर बात में वह अपनी माँ के उदाहरण को प्रस्तुत करता है । कोई भी स्त्री दूसरी स्त्री की तारीफ़ या प्रशंसा नहीं सुन सकती, फिर चाहे वह स्त्री उसकी सास ही क्यों न हो । नायिका शुरू-शुरू में कुछ समय तो अपने को जप्त कर लेती है, परन्तु धीरे-धीरे उसके भीतर का विद्रोह आकार लेने लगता है । और तब इस विषय को लेकर उनके बीच झगड़े शुरू हो जाते हैं । नौबत यहाँ तक आती है कि इस कारण से उनका विवाह विच्छेद भी हो जाता है ।[१३]

माता के अतिरिक्त इस प्रकार का बद्धत्व कुछ लोगों में अपनी भगिनी के प्रति भी होता है । उपर्युक्त उपन्यास 'दिन के तारे' में नायक शशी को अपनी माता के प्रति तो बद्धत्व भाव है ही, भगिनी के प्रति भी थोड़ा-बहुत बद्धत्व उसमें पाया जाता है । पति-पत्नी के बीच मनमेल न रहने का यह भी एक कारण है । अज्ञेयजी द्वारा प्रणीत 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास में भी नायक शेखर का

अपनी भगिनी के प्रति बद्धत्वभाव दृष्टिगोचर होता है ।

मन्नू भंडारी द्वारा प्रणीत उपन्यास 'आपका बंटी' में मातृबद्धत्व ग्रंथि दृष्टिगोचर होती है । बंटी अपनी मम्मी शकुन को ही सब कुछ समझता है । इस कारण से वह मम्मी के बिना रह नहीं सकता । डॉ. जोशी के यहां वह साधारण नहीं रह पाता और उसमें कुछ 'abnormality' उत्पन्न होती है । उसका कारण उसका यही बद्धत्वभाव है । वह अपने दैनंदिन जीवन में शकुन पर इतना निर्भर रहने लगा है कि मम्मी के बिना रहना उसके लिए प्राय: दुभर हो जाता है । पहले तो मम्मी उसे साथ सुलाती थी, परन्तु जब शकुन डॉ. जोशी के साथ विवाह कर लेती है और बंटी को डॉ. जोशी के बच्चों के साथ अलग सोना पड़ता है तब उसकी इस बद्धत्व ग्रंथि को ठेस पहुँचती है और शनै: शनै: उसका व्यवहार abnormal और problematic बच्चों-सा होने लगता है । जो बंटी पहले पढ़ने में तेज था, धीरे-धीरे वह डल होने लगता है । उसके शिक्षक उसके बारे में पहले कोई शिकायत नहीं करते थे, बाद में वे उसकी बात-बात में शिकायत करने लगते हैं ।

जैनेन्द्रकुमार द्वारा लिखित 'त्यागपत्र' उपन्यास में हम देखते हैं कि प्रमोद के मन में अपनी बुआ के प्रति एक प्रकार का बद्धत्व भाव है । इस बद्धत्वभाव के कारण ही वह अपने फूफा को घृणा और नफ़रत की दृष्टि से देखता है । सामान्य स्थितियों में ऐसा नहीं होता, भतीजा अपने फूफा को चाहता है और उनके प्रति एक सम्मान का भाव भी उसमें पाया जाता है । यहाँ ऐसा नहीं होता । प्रमोद को उसके फूफा जब उसकी पढ़ाई के संदर्भ में पूछते हैं, तो उसके सीधे-सीधे और सही उत्तर देने की अपेक्षा उटपटांग उत्तर देकर वह उनकी उड़ाने की चेष्टा करता है, इतना ही नहीं एक-दो स्थानों पर उसका व्यवहार अशिष्टता की सीमा को भी छूने लगता है । प्रमोद अपनी क्लास में अव्वल आया था फिर

भी फूफाजी के पूछने पर बताता है कि छः माही इम्त्हान में वह फेल हो गया है। फूफा जब कहते हैं कि बोलो क्या लोगे इकन्नी या दुअन्नी ? तो अशिष्टता के साथ वह कहता है कि "आपको चाहिए तो दुअन्नी मैं आपको दे सकता हूँ।....मैं आठवे दर्जे में पढ़ता हूँ और इस इम्त्हान में अव्वल आया हूँ।"[१४] इस प्रकार यहाँ इस तथ्य को रेखांकित किया जा सकता है कि प्रमोद का बद्धत्वभाव अपनी बुआ मृणाल के प्रति होने के कारण फूफा के प्रति उसका व्यवहार सहज नहीं रह पाता।

उषा प्रियंवदा द्वारा प्रणीत उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका ?' में राधिका के मन में अपने पिता के प्रति बद्धत्वभाव है। राधिका के पिता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है और राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। राधिका को उनका धीर-गंभीर और विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व आकर्षित करता है और वह अपने पिता को एक आदर्श विद्या-पुरुष मानती है। राधिका की माता का निधन बहुत पहले हो गया था तब राधिका ओर उसका भाई छोटे-छोटे बच्चे थे। राधिका के पिता दूसरा विवाह नहीं करते। पिता के प्रति अत्यधिक सम्मान होने का यह भी एक कारण है किन्तु उत्तरावस्था में बच्चों के युवा हो जाने के उपरान्त राधिका के पिता जब दूसरा विवाह कर लेते हैं तब राधिका की यह बद्धत्व ग्रंथि टूटती है। परन्तु उसके कारण राधिका में साधारणता नहीं लौट आती क्योंकि बद्धत्व ग्रंथि के स्थान पर एक दूसरी ग्रंथि आ जाती हे जो व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से और भी खतरनाक साबित हो सकती है।

मोहन राकेश कृत 'अंधेरे बन्द कमरे' उपन्यास में उपन्यास की नायिका नीलिमा की छोटी बहन शुक्ला में अपने जीजाजी हरबंस के प्रति बद्धत्व का भाव मिलता है। उसकी दृष्टि में हरबंस जीजाजी एक आदर्श पुरुष है। इस बद्धत्वग्रंथि के कारण शुक्ला को वे तमाम लोग अच्छे लगते हैं जो हरबंस के

मित्र हैं और हरबंस जब किसी से कतराना शुरू करता है तब उसके प्रति शुक्ला का दृष्टिकोण भी बदल जाता है । शुक्ला की प्रकृति नीलिमा के विपरीत है । नीलिमा नारी मुक्ति के विचारों से प्रभावित है । जबकि शुक्ला की प्रकृति summissive है । उसकी इस प्रकृति के मूल में भी हरबंस के प्रति उसका जो बद्धत्व भाव है वही मूल कारण है । हरबंस जब विदेश चला जाता है तब हरबंस के एक मित्र से वह शादी कर लेती है । विवाह के उपरान्त उसकी यह बद्धत्वग्रंथि दूर हो जाती है । यदि चह बद्धत्व ग्रंथि चालू रहती तो उसका दाम्पत्य खण्डित हो सकता था । इस बद्धत्व ग्रंथि के भंग के मूल में भी हरबंस का ईर्षालु स्वभाव कारणभूत है । शुक्ला हरबंस को जीजा के रूप में चाहती है । उसके मन में कोई दूसरा भाव नहीं है, किन्तु हरबंस के साथ यह स्थिति नहीं है । शुक्ला के भक्तिभाव को प्रेमभाव समझकर वह धीरे-धीरे उसे चाहने लगता है । यद्यपि यह चाहत एकतरफा (one sided) है । यदि हरबंस के मन में शुक्ला के प्रति वात्सल्यभाव होता तो उसका विवाह करनो उसे अच्छा लगता । परन्तु शुक्ला जब विवाह कर लेती हे तो ईर्ष्याभाव के कारण हरबंस का व्यवहार सहज (normal) नहीं रह पाता और यहाँ पर वह आदर्श मूर्ति खण्डित होती हे जो शुक्ला के मन में स्थापित थी । जहाँ राधिका की बद्धत्व ग्रंथि टूटने पर उसके चरित्र विकास को क्षति पहुँचती है, वहाँ शुक्ला के संदर्भ में उसका एक शुभ परिणाम सामने आता है । कारण बिल्कुल स्पष्ट है । राधिका एक ग्रंथि से मुक्त होकर दूसरी ग्रंथि में फँसती है वहाँ शुक्ला पूर्णतया ग्रंथि-मुक्त हो जाती है । वह जिस जीजा को आदर्श पुरुष और देव पुरुष मानती थी वह 'माटीपगा' सिद्ध होता है । और तब उसे अपने पति की बात और भी सही और वास्तविक लगती है ।

शशिप्रभा शास्त्री कृत उपन्यास 'सीढ़ियाँ' के नायक सुकेत में अपनी मनीषी मौसी के प्रति बद्धत्व भाव है । मनीषी सुकेत की सगी मौसी नहीं हे ।

सुकेत उसकी सहेली सुपर्णा का पुत्र है । मनीषी डॉक्टर है और सुपर्णा मरते समय अपने बेटे सुकेत को मनीषी को सौंप जाती है । सुकेत मनीषी को बहुत चाहता है । धीरे-धीरे यह चाहत मौसी के प्रति की चाहत न रहकर दूसरे प्रकार की चाहत में बदल जाती है, क्योंकि सुकेत की दृष्टि में मनीषी दुनिया की सर्वोत्तम महिला है । दोनों की आयु में दस-बारह साल का फासला है । परन्तु सुकेत इस बद्धत्वग्रंथि के कारण मनीषी को दूसरे रूप में चाहने लगता है । मनीषी को वह पागलपन की सीमा तक प्यार करता है और उसके सामने विवाह का प्रस्ताव भी रखता है । मनीषी भी सुकेत को चाहती है । उसके बिना वह भी नहीं रह सकती, परन्तु मनीषी बड़ी है, सुशिक्षित है, समझदार और गंभीर है । वह अपनी वैयक्तिक भावनाओं को दबा लेती है । उसका विवेकशील मन सामाजिक परंपराओं का उल्लंघन नहीं चाहता । सुकेत जब विवाह का प्रस्ताव रखता है तब मनीषी उसे खूब समझाती है । सुकेत विदेशों के उदाहरण देता है । एक बार वह एक अखबार की कटिंग भी दिखाता है जिसमें वियेना की एक पैंतालीस वर्षीय प्रौढ़ महिला ने एक तेईस वर्ष के नवयुवक के साथ विवाह किया था । उस पर मनीषी समझाती है कि यह युरोप नहीं हिन्दुस्तान है । सुकेत मनीषी को कहता है - 'तुम मेरी सबकुछ हो, ममी-मासी- मित्र-प्रेयसी सब कुछ । धर्मशास्त्र और हिन्दुस्तान, मैं किसी की कोई चिन्ता नहीं करता । सम्बन्ध, समाज और परम्परा इन सब पर तुम मुझे क्यों बलि चढ़ाना चाहती हो ? मेरे लिए ये चीजें कोई महत्व नहीं रखती ।'[१५] जब मनीषी सुकेत के साथ विवाह नहीं करती तब वह उसकी प्रतिक्रिया में शारदा नामक एक युवती से विवाह कर लेता है । शारदा से विवाह करने पर सुकेत धीरे-धीरे अनुभव करता है कि मनीषी के प्रति उसका जो आकर्षण था वह युवावस्था के प्रथम ज्वार का आकर्षण था । साहचर्य और सुलभता के कारण उसे मनीषी की अनिवार्यता प्रतीत होती थी । परन्तु जब वह शारदा से विवाह कर लेता है तब जीवन की वास्तविकता से परिचित होता है और तब मनीषी के प्रति उसकी जो बद्धत्व

ग्रंथि थी वह दूर हो जाती है । उसके बाद का उसका व्यवहार एक normal पुरुष का व्यवहार रहता है ।

भगवतीचरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास में उसकी नायिका रेखा को प्राफेसर प्रभाशंकर के प्रति बद्धत्व का भाव है । इसी बद्धत्व भाव के कारण ही वह प्रोफेसर के प्रति आकर्षित होती है ओर अन्ततः उनसे विवाह कर लेती है । दोनों की आयु में काफी अंतर है । कुछ समय के उपरान्त यह बद्धत्वभाव खण्डित होने लगता है । रेखा यदि प्रोफेसर से विवाह न करती और बद्धत्व ग्रंथि टूटती तो उसका स्वस्थ परिणाम निकलता । परन्तु यह बद्धत्व ग्रंथि विवाह के बाद टूटती है । फलतः रेखा में अन्य यौनग्रंथियों का निर्माण होता है; जिनके कारण उसका चारित्रिक पतन होता है ।

४:०४:०४ इलेक्ट्राग्रंथि (Electra Complex)

जैसा कि पहले निर्दिष्ट किया गया है इलेक्ट्रा ग्रंथि का निर्माण स्त्रियों में होता है । मनोविज्ञान के अनुसार लड़की की रूझान अपने पिता के प्रति होती है परन्तु किन्हीं कारणों से यदि उसके मन में अपने पिता के प्रति वितृष्णा या उपेक्षा का भाव जाग्रत हो तो इलेक्ट्राग्रंथि का निर्माण होता है । 'पचपन खंभे लाल दीवारें' (उषा प्रियंवदा) की सुष्मा अपने पिता को चाहती है । परन्तु बाद में उसके पिता फालीज के शिकार होते हैं और उसके कारण समूचे परिवार की जिम्मेदारी सुष्मा के कंधों पर आ जाती है । सुष्मा के पिता लकवाग्रस्त है, लाचार और विवश है । अतः उनके प्रति सुष्मा के मन में सहानुभूति और संवेदना का भाव है । शुरू-शुरू में खुशी-खुशी वह अपने पिता का उत्तरदायित्व वहन करती है । उसमें इलेक्ट्रा ग्रंथि का निर्माण तब होता है जब उसके जीवन में नील का प्रवेश होता है । सुष्मा एक नारी है । उसके मन में भी अनेक अरमान हैं, अनेक सपने हैं जब तक नील नहीं आया था तब तक मानो उसके सपनों

की चिनगारी पर राख पड़ी हुई थी। परन्तु नील को चाहने के उपरान्त जब वह अनुभव करती है कि अन्य लड़कियों की तरह वह वैवाहिक जीवन नहीं निभा सकती, तब उसको अपने घर-परिवार के प्रति और विशेषत: अपने पिता के प्रति चिढ़-सी होती है और वह मन ही मन सोचने लगती है कि सामर्थ्य नहीं थी तो इतने बच्चे पैदा करने की क्या जरूरत थी ? इलेक्ट्रा ग्रंथि के निर्माण का यह प्रस्थान बिंदु है। इस ग्रंथि के कारण स्त्री में कर्कशता, कठोरता और चिड़-चिड़ापन का भाव पैदा हो सकता है जिसका संकेत लेखिका ने उपन्यास में ही दे दिया है। एक स्थान पर अपनी सहेली मीनाक्षी से वह कहती है - "पैंतालीस साल की आयु में मैं भी एक कुत्ता या बिल्ली पाल लूंगी - उसे सीने से लगा रखूँगी।"[१६] सुष्मा ऐसा कहती है उसके पीछे कारण है उसकी कॉलेज में संस्कृत की व्याख्याता मिस शास्त्री है। संस्कृत साहित्य की व्याख्याता होने के कारण उसमें रसिकता होनी चाहिए, बजाय उसके उसमें कर्कशता और कठोरता पायी जाती है। जीवन के शून्य को भरने के लिए उसने एक बिल्ली को पाल रखा है। सुष्मा का इशारा इस ओर है।

उषा प्रियंवदा के ही दूसरे उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका ?' में प्रारंभ में तो राधिका में पितृबद्धत्व ग्रंथि पायी जाती है परन्तु जब उसके पिता विद्या से विवाह कर लेते हैं, तब राधिका में इलेक्ट्राग्रंथि का निर्माण होता है। उसके बाद का राधिका का व्यवहार बदल जाता है। वह प्रत्येक बाद अपने पिता को कोई मानसिक आघात देने के लिए उद्यत रहती है। विदेशी पत्रकार पीटरसन के साथ वह जो भाग जाती है उसके पीछे भी यही कारण है और इसी कारण से पीटरसन के साथ का उसका विवाह सफल नहीं होता। पीटरसन के साथ उसका कोई मनमेल नहीं था, वह तो केवल पिता को आघात पहुँचाना चाहती थी। पीटरसन के स्थान पर यदि कोई दूसरा पुरुष होता तो भी वह यही करती। विदेश यात्रा से लौटने पर वह कुछ स्थिर होना चाहती थी। मनीष उसका मित्र

था । पर वह उसकी प्ले-बॉय टाईप की प्रकृति से परिचित थी । मनीष मित्र तो हो सकता है, पति नहीं । यह जानते हुए भी राधिका फिर उसके साथ दक्षिण भारत के प्रवास के लिए चल पड़ती है । इसका कारण भी यही इलेक्ट्रा ग्रंथि है । विद्या आत्महत्या कर चुकी थी । उसके पिता पुन: अकेले हो चुके थे । यदि उसके पिता राधिका को अपने साथ रहने की बात न करते, तो शायद राधिका उनके साथ रहती । परन्तु प्रस्ताव जब सामने से आता है तब राधिका फिर (प्रतिक्रियायित) होती है और यकायक मनीष के साथ जाने का निर्णय कर लेती है । भागवत कथा के आरंभ में एक धुंधली का चरित्र आता है । धुंधली जो उसे कहा जाता है उसके विपरीत आचरण करती है । यहाँ राधिका का आचरण भी धुंधली जैसा है और उसके मूल में यही इलेक्ट्रा ग्रंथि है ।

शशीप्रभा शास्त्री कृत 'नावें' उपन्यास की नायिका मालती में भी इलेक्ट्रा ग्रंथि पायी जाती है । उसके पिता घर-परिवार का बोझ नहीं उठा सकते, फलत: मालती को नौकरी करनी पड़ती है । अत: पिता के प्रति उसमें कोई आदर का भाव नहीं है । मालती के पिता रिटायर्ड हो गये हैं और घर का पूरा निर्वाह मालती की कमाई पर चल रहा है । घरवालों को भी मालती की कमाई से मतलब है । वह कहाँ जाती है ? क्या करती है ? कई-कई दिनों तक घर क्यों नहीं आती है ? इन सब बातों से घरवालों को तथा उसके पिता को कोई फिक्र-चिन्ता नहीं है । मालती के बोस सोमजी मालती के प्रति बहुत उदार है । इस उदारता की कृतज्ञता में मालती सोमजी को समर्पित हो जाती है । किन्तु जब मालती को सोमजी का गर्भ रहता है तब उसके घरवाले उसका विरोध करते हैं, उसे घर से निकाल देते हैं । मालती में पिता के प्रति इलेक्ट्रा ग्रंथि शुरू से ही थी किन्तु इस घटना के बाद वह ग्रंथि और भी गहरी हो जाती है ।

निरूपमा सेवती के उपन्यास 'पतझड की आवाजें' की नायिका अनुभा में भी यह ग्रंथि पायी जाती है, क्योंकि 'नावें' की मालती की भाँति अनुभा के

घर की स्थिति भी ठीक नहीं है । अनुभा के पिता उसे अधिक पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे । पिता के विरोध के बावजूद वह बी.ए. में दाखिला लेती है । परन्तु बाद में पिता की दयनीय अवस्था को देखते हुए वह पढ़ाई छोड देती है । टाइपिंग का कोर्स कर स्वयं को नौकरी में झौंक देती है । अनुभा पढ़ना चाहती है । उसमें प्रतिभा है । वह आगे बढ़ना चाहती है परन्तु पिता की लाचारदर्जी को देखके उसे मन मसोस कर रह जाना पड़ता है । पिता की स्थिति को लेकर उसके मन में सहानुभूति और संवेदना के भाव हैं किन्तु दूसरी ओर उनको लेकर उसके मन में खीज भी है कि जब आर्थिक सामर्थ्य नहीं थी, तो इतना लम्बा-चौड़ा घर बसाने की क्या आवश्यकता थी । ठीक इसी बिन्दु पर उसके मन में इलेक्ट्रा ग्रंथि उत्पन्न होती है, यद्यपि उसकी यह ग्रंथि उतनी तीखी और कटु नहीं है जितने 'नावें' की मालती की थी ।

निरूपमा सेवती के दूसरे उपन्यास 'बंटता हुआ आदमी' की सुनंदा अपने पिता को बहुत ज्यादा नफ़रत करती है क्योंकि वह शराबी और जुआरी है । अपनी इन गंदी और घिनौनी आदतों के कारण वह न केवल पूरे परिवार को दरिद्रता की भठ्ठी में झोंक देता है बल्कि सुनंदा को भी कच्ची उम्र में शरीर का सौदा करने पर मजबूर कर देता है । बारह-तेरह साल की उम्र में सुनंदा जीवन की गंदी-घिनौनी वास्तविकता से परिचित हो जाती है । परन्तु सुनंदा में जो इलेक्ट्राग्रंथि है उसको हम विशुद्ध इलेक्ट्रा ग्रंथि नहीं कह सकते क्योंकि वह सुनंदा का सगा बाप नहीं है, सौतेला बाप है । सुनंदा के सगे पिता तो उसके बचपन में ही दिवंगत हो गये थे ।

रजनी पनीकर के उपन्यास 'दो लडकियाँ' की रंजना में भी यह ग्रंथि पायी जाती है । रंजना को भी पिता के रहते हुए पिता के दायित्वों को वहन करना पडता है । घर की आर्थिक हालत इतनी खराब है कि रंजना को नौकरी

करनी पड़ती है । प्राय: देखा गया है कि जहाँ नौकरी की सख्त आवश्यकता होती है वहाँ लोगों को अपनी योग्यता के अनुसार नौकरी नहीं मिलती है । 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की सुष्मा, 'तत्सम्' की वसुधा या 'टेराकोटा' की मिति की भाँति यदि एम.ए. पास रंजना को कोई अच्छी नौकरी मिल जाती तो उसे अपने जीवन, अपने घर परिवार और अपने पिता से कदाचित इतनी नफ़रत न होती । परन्तु रंजना को मामूली-सी नौकरी मिलती है । नौकरी के चार-पाँच साल बाद भी उसका कुल वेतन पाँच सो रूपया है ।[१७] इतनी आमदनी में परिवार का निर्वाह करना कठिन था । अत: विवश होकर रंजना को अधिक अर्थोपार्जन के लिए देह को माध्यम बनाना पडता है । इसी सिलसिले में राजन, शेठ कनोड़िया जैसे लोगों से रंजना को शारीरिक संबंध जोड़ना पड़ता है । रंजना एक प्रकार से अपने जीवन से समझौता कर लेती है । शादी-ब्याह करके वह अपनी घर गृहस्थी नहीं बसा सकती, क्योंकि ऐसी परिस्थिति में उसका परिवार भूखों मर सकता है । इस विचित्र स्थिति के कारण अपने शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु चह बीच का रास्ता अपनाती है । कई बार उसे अपने इस प्रकार के जीवन से घीन भी होती है और तब अपने पिता के प्रति अपने मन का आक्रोश स्पष्ट हो जाता है । एक स्थान पर वह कहती है - "मैं किसी शोख को पूरा करने के लिए या फैशन को पूरा करने के लिए नौकरी नहीं करती । मैं काम इसलिए करती हूँ कि घर की आवश्यकताएँ पूरी हो जाय । परिवार के लोगों को दोनों समय का भोजन मिल सके ।"[१८]

शीला रोहेकर कृत उपन्यास 'दिनांत' की नायिका आशा भी इलेक्ट्रा ग्रंथि से पीड़ित है । उसे भी अपने पिता से घृणा है । अत: 'रूकोगी नहीं राधिका ?' की राधिका की भाँति उसे भी उन तमाम कामों में आनंद आता है जिनसे उनके पिता को तकलीफ पहुँचती है । इस प्रवृत्ति के कारण वह दिनभर लड़कों के साथ आवारागर्दी करती हुई घूमती रहती है । इस प्रकार अपने पिता

को उपेक्षित करने में उसे एक आत्म-संतुष्टि का भाव प्राप्त होता है । पिता के प्रति उपेक्षाभाव का कारण यह है कि आर्थिक अभावों के कारण उसके पिता उसका विवाह नहीं कर सकते और इस कारण आशा ढीढ और गुमराह हो जाती है ।

सुरेन्द्रवर्मा कृत 'मुझे चाँद चाहिए' की नायिका वर्षा वशिष्ठ में भी इलेक्ट्रा ग्रंथि पायी जाती है । अपने घर परिवार से सम्बद्ध त्रासद स्थितियों से वर्षा को एक प्रकार का तिरस्कार है । इन स्थितियों के लिए उसके रूढिचुस्त और दकियानुस पिता जिम्मेदार है । अत: किशोरावस्था से ही पिता के प्रति एक प्रकार का विद्रोहात्मक भाव उसके मन में मिलता है । पिता को पूछे बिना ही वह अपना नाम यशोदा शर्मा से वर्षा वशिष्ठ करवा देता है । इतना ही नहीं पिता की अवज्ञा करते हुए वह 'सौम्यमुद्रा' नाटक में नायिका का किरदार भी निभाती है । पिता के प्रति उसके मन में जो आक्रोश है । उसका वर्णन लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में किया है - ''आत्मपीड़न और संत्रास की यही प्रक्रिया थी, जो वर्षा को बहन का अंतरंग बना गयी । गायित्री धीरे-धीरे जैसे चुप्पी व अपराधी बन गयी थी, उससे वर्षा मन-ही-मन द्रवित होने लगी । जब जिज्जी एक बासी रोटी और थोड़ा-सा चावल खाकर संतुष्टि दिखाते हुए उठ जाती, तो वर्षा के अंदर गुस्सा उफान लेने लगता और उसका केन्द्र बनते पिता । जब सामर्थ्य नहीं थी, तो ताबड़तोब बच्चे क्यों पैदा किये ? परिवार का नियोजन क्यों नहीं किया ? इतने तो तरीके है क्यों सुअर की तरह इतने पिल्ले पैदा करके कीचड़ में लौटने के लिए छोड़ दिये ?''[११]

यहाँ पर वर्षा का जो आक्रोश है वह दिनांत की आशा के समान ही है । प्राय: मध्यवित्त परिवारों में सुशिक्षित लड़कियों में इसी प्रकार का आक्रोश मिलता है और यहीं से इलेक्ट्रा ग्रंथि की शुरूआत हो जाती है ।

४:०४:०५ इडीपस ग्रंथि

मनोविज्ञान के अनुसार पुत्र की रूझान साधारणतया माता के प्रति होती है, परन्तु किन्हीं कारणों से यदि उसमें व्यवधान या विक्षेप आता है तो पुरुष पात्र में इडीपस ग्रंथि का निर्माण होता है । इडीपस ग्रंथि पुरुषों में पायी जाती है ।

मन्नू भंडारी कृत 'आप का बंटी' उपन्यास में बंटी अपनी मम्मी को बहुत चाहता है । मम्मी के प्रति एक प्रकार का बद्धत्वभाव उसमें मिलता है । परन्तु शकुन जब डॉ. जोशी से विवाह कर लेती है और शकुन डॉ. जोशी के बच्चों को अधिक महत्व देते हुए बंटी की उपेक्षा करती है या बंटी को कम से कम ऐसा लगता है कि उसकी मम्मी उसकी उपेक्षा करती है कि उसकी मम्मी पहलेवाली मम्मी नहीं रही, तब उसमें इडीपस ग्रंथि विकसित होती है । इस इडीपस ग्रंथि के कारण ही किसी समय का प्रखर, तेज और मेधावी बंटी धीरे-धीरे डल होता जाता है । स्कूल में उसका शुमार अब प्रोब्लेमेटीक (Problematic) चाइल्ड के रूप में होने लगता है । बंटी का पथारी में पेशाब गरना भी इसी प्रवृत्ति का द्योतक है । प्रस्तुत उपन्यास में तो बंटी के शैशवकाल को लिया गया है परन्तु ऐसे बच्चे आगे चलकर भी समाज के लिए समस्या रूप बनते हैं । ऐसे बच्चे जब युवा होते हैं तब भी उनमें एक प्रकार की असुरक्षा का भाव रहता है । स्त्रियों के प्रति उनके अन्त:मन में कहीं न कहीं घृणा का भाव रहता है । अत: न वे अच्छे पति बन पाते हैं, ने अच्छे प्रेमी । रजनी पनीकर के उपन्यास 'महानगर की मीता' का नायक नायिका का आर्थिक शोषण करते हुए अपनी पढ़ाई पूरी कर लेता है और उसके बाद मीता को छोड़ देता है । क्योंकि वह भी इडीपस ग्रंथि का ही शिकार था । माता ने बचपन में अनाथ कर दिया था, मानों उसका प्रतिशोध वह पूरे स्त्री समाज से लेता है ।

राजकमल चौधरी कृत उपन्यास 'मछली मरी हुई' का नायक निर्मल पद्मावत् भी इसी ग्रंथि से ग्रस्त है । निर्मल जब छोटा था तब घरबार बेचकर उसकी माँ एक ड्राईवर के साथ भाग गयी थी । माँ के प्रति नफरत और घृणा का भाव उसे असाधारण बना देता है । उसकी यह असाधारणता के पीछे यह ग्रंथि उत्तरदायी है । युवावस्था में महिलाओं के साथ वह सहज नहीं रह पाता है उसका कारण भी यह ग्रंथि ही है ।

निर्मल वर्मा कृत 'वे दिन' उपन्यास में नायक का एक बर्मीश मित्र है जिसको होस्टेल में सब टी.टी. के नाम से जानते हैं । टी. टी. को जब पता चलता है कि देश में उसकी माँ ने दूसरा विवाह कर लिया तब उसमें भी यह ग्रंथि पैदा होती है । यद्यपि मित्रों को वह पार्टी देता है परन्तु उसका यह पार्टी देना एक प्रकार से उसकी भीतरी घुटन को ही व्यक्त करता है । कई बार व्यक्ति भीतर से टूट-फूट जाता है, किन्तु ऊपर से अत्यधिक प्रसन्न रहने का नाटक करता है । टी. टी. का यह व्यवहार भी उसी प्रवृत्ति को द्योतित करता है ।

निरूपमा सेवती द्वारा प्रणीत 'बँटता हुआ आदमी' उपन्यास में सुनंदा की माँ पुनर्विवाह करती है । वह ऐसा अपने बच्चों के पालन पोषण हेतु करती है । परन्तु जिस व्यक्ति के साथ वह विवाह करती है वह बहुत ही बुरा व्यवहार सुनंदा तथा उसके भाई-बहनों के साथ करता है । बल्कि उस व्यक्ति के कारण ही सुनंदा को वेश्यावृत्ति करनी पडती है । इन सब कारणों के लिए सुनंदा की माँ उत्तरदायी नहीं है, तथापि सुनंदा तथा उसकी बहनें अपनी माँ को कोसती है, उसके लिए भला-बुरा कहती है, क्योंकि उसके पुनर्विवाह करने से ये स्थितियाँ पैदा हुई थी । अत: जहाँ तक सुनंदा के भाइयों का सवाल है उन लोगों के मन में अपनी माँ के प्रति इडीपस ग्रंथि है ऐसा कहा जा सकता है । शीला रोहेकर कृत 'दिनांत' उपन्यास में आशा में जो ग्रंथि है वह तो इलेक्ट्रा है किन्तु उसके भाइयों में जो ग्रंथि है वह इडीपस ग्रंथि है ।

जगदंबा प्रसाद दीक्षित कृत 'मुर्दाघर' उपन्यास में झोंपडपट्टी के जिन बच्चों का उल्लेख किया है उन सभी बच्चों में भी कहीं-न-कहीं इडीपस ग्रंथि को अन्वेषित किया जा सकता है ।

इलाचन्द्र जोशी कृत 'प्रेत और छाया' उपन्यास के नायक पारसनाथ में इडीपस कोम्प्लेक्ष दृष्टिगत होती है । पारसनाथ के पिता एक दिन उसे कहते हैं - ''तुझे मालूम है छोकरा कि तू अपने बाप का यानि अपनी माँ के पति का बेटा नहीं है । तेरा बाप मैं नहीं बल्कि शिवशंकर वैद्य है । उस चमार को तूने भी अक्सर अपनी माँ के पास आते-जाते देखा होगा । तेरी सूरत आधी उस चमार से मिलती है और आधी अपनी माँ से । तेरी उस कुल्टा माँ के कारण ही मुझे गाँव की जमींदारी छोड़कर यहाँ इतनी दूर आना पडा है ।''[२०] पिता से सुनी ऐसी बातों के कारण पारसनाथ मानसिक विकारों से ग्रस्त हो जाता है और उस दिन से वह संपूर्ण स्त्री जाति में नाजायज संतानों को पैदा करने वाली अपनी व्यभिचारिणी माता की छाया देखता है और परिणामस्वरूप संपूर्ण स्त्री जाति से नफरत करने लगता है । इस संदर्भ में एक स्थान पर वह कहता है - ''स्त्रियों की इज्जत की बात मैंने खूब सोची । स्त्री और इज्जत, आज तक कितनी स्त्रियों की इज्जत मैंने की है ? और करूँ भी क्यों ? इस जाति में ऐसा कोई गुण है भी जिसका आदर किया जा सके ? मेरा दृढ़ विश्वास है कि संसार में केवल वही स्त्रियों 'सती-साधवी' होने का ढोंग रच सकती है जिन्हें या तो समाज के कड़े बंधनों ने स्वेच्छाचारण का मौका नहीं दिया या जिन्हें प्रार्थित पुरुष प्राप्त नहीं हो पाये हैं । मैं अभी किसी साधवी स्त्री के पीछे पड़ जाऊँ तो देखूं कि वह अपने सतीत्व को किस हद तक कायम रख सकती है ।''[२१] इस ग्रंथि के कारण पारसनाथ के जीवन की धुरी ही गड़बड़ा जाती है । वह दुराचरण के पथ पर चल पड़ता है । अन्ततः उसकी यह ग्रंथि तभी छूटती है जब आखिर में उसका पिता रहस्यस्फोट करता है कि उसने जान-बूझकर

पारसनाथ को उसकी माँ के खिलाफ भड़काया था। पारसनाथ के पिता कहते है - ''मैं भली-भाँति जानता था कि तुम्हारी माँ के रक्त की एक-एक बूंद में सतीत्व की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। शायद इसी प्रतिक्रिया के फल से मेरे विरत मन को यह विश्वास करने की इच्छा हुई कि वह घोर असती है। जिस दिन कालीपांग में मैंने तुम्हारा तिरस्कार करते हुए तुमसे कहा था कि तुम मेरे बेटे नहीं हो उस दिन तुम्हारे प्रति मेरे मन में सबसे अधिक स्नेहभावना उमड़ी थी।''[२२] पिता के इस खुलासे के बाद पारसनाथ के ग्रंथि की गांठे खुल जाती है और उसके बाद स्त्री जाति को वह आदर और इज्जत की दृष्टि से देखने लगता है।

४:०४:०६ फोबिया ग्रंथि

आहार, भय, मैथुन इत्यादि की गणना मूलभूत जीवन प्रवृत्तियों के अंतर्गत होती है। प्रत्येक मनुष्य को किसी-न-किसी वस्तु का, प्राणी या जीव जंतु का भय लगता है। जैसे सर्प, बिच्छू, छिपकली, कुत्ता, बिल्ली या भूतप्रेत आदि का। प्रत्येक मनुष्य को इनमें से कुछ का भय अवश्य लगता है। किन्तु यह भय जब अतिशयता का, असाधारणता का रूप धारण करता है तब उसे फोबिया ग्रंथि के अंतर्गत रखा जाता है। जैसे - प्राय: लोगों को कुत्तों से भयभीत होते हुए देखा गया है किन्तु कोई व्यक्ति यदि कुत्ते को देखकर अपने होशोहवास ही खो बैठे, तब उसे फोबीया ग्रंथि कहते हैं। कुत्ते को अक्सर पानी से बहुत भय लगता है। उसे 'वाटर फोबिया' नाम दिया गया है। किसी को छिपकली का फोबिया होता है, किसी को कॉकरोज का।

राजकमल चौधरी कृत उपन्यास 'मछली मरी हुई' के नायक निर्मल पद्मावत को स्केलेटन (हार्डपिंजर) का फोबिया है। स्केलेटन को देखकर वह नॉर्मल नहीं रह पाता है। कल्याणी को उसने मदद की थी। उस मदद के बदले

में कल्याणी उसे अपना प्रेम देना चाहती है और इसलिए एक हॉटल में बुलाती है। निर्मल उसे प्रेम करने जा रहा था कि अचानक वह स्केलेटन को देख लेता है और उसके कारण उसकी इन्द्रिय में शैथिल्य आ जाता है। वह प्रेम करने के काबिल नहीं रहता। इस पर कल्याणी उसे नपुंसक समझते हुए उसका तिरस्कार करती है। वस्तुत: कल्याणी को ज्ञात नहीं है कि निर्मल पद्मावत की स्थिति के लिए स्केलेटन जिम्मेदार है।

उषा प्रियंवदा कृत 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की नायिका सुष्मा को छिपकली का फोबिया है। शैशवकाल से ही वह छिपकली से बहुत डरती थी। बाद में पढ़-लिखकर वह लेक्चरर हो जाती है। परन्तु उसका यह डर जाता नहीं है। सुष्मा का प्रेमी नील उसके इस डर को दूर करने की भरसक चेष्टा करता है परन्तु वह उसमें सफल नहीं होता है।

मेहरून्निसा परवेज़ कृत उपन्यास 'आँखों की दहलीज़' की नायिका तालिया को कॉकरोज से बहुत डर लगता था। शुरू-शुरू में उसका पति इसे एक साधारण घटना के रूप में लेता है परन्तु बाद में अनुभव करता है कि तालिया का यह भय साधारण किस्म का नहीं है। कॉकरोज को देखते ही वह भागने लगती है। उसे किसी भी बात का ख्याल नहीं रहता है। इस फोबीया ग्रंथि का अपराधशास्त्र में (क्रिमीनोलॉजी में) बखूबी प्रयोग किया जाता है। अपराधवृत्ति वाले लोग प्रतिपक्षी को मात करने के लिए उसका प्रयोग करते हैं। यदि किसी बदमाश गुंडे या असामाजिक तत्व को किसी व्यक्ति की फोबिया ग्रंथि का पता चल जाय तो उसके माध्यम से वे अपना मन चाहा कार्य करवा सकते हैं। दूसरी तरफ पुलिस विभाग में भी अपराधियों से सच उगलवाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

मीना दास कृत उपन्यास 'ढहती दीवारें' में उसकी नायिका को अपराध-

जगत में लाने के लिये प्रथमतः इसका प्रयोग किया जाता है । मन्नू भंडारी कृत उपन्यास 'आपका बण्टी' में बंटी की मम्मी शकुन लड़कियों के कॉलेज में प्राचार्या है । अत: बंटी का अधिकांश समय मौसी 'आया' के साथ गुजरता है । मौसी बंटी को प्राय: भूत-प्रेत और राक्षसों की कहानियाँ सुनाती रहती है । अत: बंटी को अंधकार के प्रति फोबिया हो जाता है । अंधेरे में उसके सामने कहानियों में सुने भूत-प्रेत और राक्षसों की आकृतियाँ उभर कर आती हैं । पहले बंटी या तो मौसी के पास रहता था या मम्मी के । परन्तु शकुन जब पुनर्विवाह करके डॉ. जोशी के वहाँ रहने चली जाती है तब उसे डॉ. जोशी के बच्चों के साथ अकेले में सोना पड़ता है । ऐसी स्थिति में बंटी मारे भय के पथारी में ही पेशाब करने लग जाता है । डॉ. जोशी के यहाँ जाने पर बंटी का व्यवहार एक 'प्रोब्लेमेटीक चाईल्ड' सा होने लगता है । उसके पीछे यह फोबिया भी कारणभूत है ।

४:०४:०७ यौन ग्रंथियाँ : (Complexes related to sex)

मनुष्य के जीवन में यौन-जीवन का विशेष महत्व है । जीवन के कई वर्ष यौन जीवन से सम्बद्ध होते हैं । साधारणतया किसी व्यक्ति का जीवन यदि साधारण (Normal) स्थितियों में व्यतीत होता है तो उसका यौन-जीवन स्वस्थ रहता है, किन्तु यदि किसी व्यक्ति के जीवन में यौन-जीवन से सम्बद्ध कोई अघटित घटना घट जाती है तब उसका यौन-जीवन स्वस्थ नहीं रह पाता है और उसमें कोई-न-कोई ग्रंथि का निर्माण होता है । ऐसी ग्रंथि यदि यौन-जीवन से सम्बद्ध होती है तो उसे यौन ग्रंथि कहा जाता है ।

भगवतीचरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास में उपन्यास की नायिका रेखा प्रोफेसर प्रभाशंकर नामक प्रौढ़ व्यक्ति से विवाह करती है । प्रारंभिक भावावेग के शमन के पश्चात स्वयं रेखा अनुभव करती है कि प्रोफेसर उसकी यौन-क्षुधा

संतुष्ट करने में सक्षम नहीं है । परन्तु प्रकट रूप से वह प्रोफेसर से कुछ नहीं कहती । यौन संतुष्टि के लिए वह नये-नये शिकारों की टोह में रहती है । ऐसा ही एक शिकार है निरंजन कपूर जो प्रोफेसर का भूतपूर्व छात्र था । रेखा और निरंजन कपूर मसूरी में खूब रंगरेलियाँ मनाते हैं । परन्तु अन्ततः रेखा की चोरी पकड़ी जाती है । निरंजन कपूर का सिगरेट केस प्रोफेसर के तकिये के नीचे रह गया था । डॉ. प्रभाशंकर रेखा को खूब मारते-पीटते हैं, उसे घर से निकाल देने की धमकी भी देते हैं, किन्तु रेखा द्वारा मिन्नत-समाजत करने पर पिघल जाते हैं और उसे घर में रहने देते हैं । अब तक प्रोफेसर का यौन-जीवन एक सीधी रेखा में व्यतीत हो रहा था, रेखा असंतुष्ट रहती थी, किन्तु प्रोफेसर को उसका अहसास नहीं होता था, लेकिन इस घटना के बाद प्रोफेसर निरंतर यह महसूस करते हैं कि वे रेखा को संतुष्ट नहीं कर पा रहे हैं । फलतः उनके भीतर यौन ग्रंथि का निर्माण होता है । रेखा के सम्मुख यौन दृष्टि से वे और भी कमजोर पड़ जाते हैं । उन्हें भीतर ही भीतर यह लगने लगता है कि वह क्रमशः नपुंसकता की ओर संक्रमित हो रहे हैं । यह यौन ग्रंथि के कारण ही है, अन्यथा जो प्रोफेसर रेखा के सामने कमजोरी महसूस करते हैं वे ही प्रोफेसर मिसेज रत्ना चावला के साथ पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सफल संभोग कर सकते हैं । मिसेज रत्ना चासला के साथ उनको किसी भी प्रकार की दिक्कत पेश नहीं आती है ।

उम्र के फासले के कारण जहाँ एक ओर प्रोफेसर प्रभाशंकर में यौन ग्रंथि के कारण नपुंसकता पैदा होती है, वहीं दूसरी ओर रेखा काम-अतृप्ति और कामाग्नि की अतिशयता के कारण क्रमशः एक निम्फो (Nimpho) औरत हो जाती है । यदि रेखा का यौन जीवन साधारण (Normal) ढंग से व्यतीत होता, उसका विवाह यदि किसी समवयस्क युवक से होता तो उसके जीवन में यौन ग्रंथि का निर्माण नहीं होता । परन्तु प्रौढ़ वय के प्रोफेसर से विवाह करने के कारण उसकी कामाग्नि शतसः बढ़ जाती है और फलतः एक निम्फो स्त्री की

भाँति वह निरंतर नये-नये शिकारों की खोज में रहती है । निरंजर कपूर वाली घटना के बाद कुछ दिन तो वह विवाहेतर संबंधों से दूर रहती है । परन्तु कुछ ही दिनों में वह पुन: पुराने मार्ग पर चल पड़ती है । शुरू-शुरू में वह प्रोफेसर से डरती है और सतर्कता बरतती है परन्तु बाद में उसकी हिम्मत खुल जाती है और वह सरेआम रंगरेलियाँ मनाने लगती है ।

'रेखा' उपन्यास की रेखा जहाँ यौन ग्रंथि के कारण Nimpho हो जाती है, वहाँ 'पानी बीच मीन पियासी' का नायक एक ऐसा यौन पिशाच हो जाता है कि अपनी यौन संतुष्टि के लिए वह तमाम प्रकार की मर्यादाओं का उल्लंघन कर जाता है । ऐसे यौन पिशाच को 'Sex Maniyak' कहते हैं । श्रीमती कान्ता भारती द्वारा प्रणीत उपन्यास 'रेत की मछली' का नायक शोभन भी एक सेक्स् मेनियाक व्यक्ति है । अस्पताल में उसकी पत्नी कुंतल प्रसववेदना में कराह रही थी तब दूसरे कमरे में शोभन कुंतल की सहेली मिनल के साथ रंगरेलियाँ मना रहा था । शोभन यौन ग्रंथि का शिकार है । प्रसववेदना में बेहोश होती हुई पत्नी को भी वह एक बार निर्वसन करके देखना चाहता है । उसकी यौन ग्रंथि की पराकाष्ठा वहाँ दृष्टिगत होती है, जहाँ वह कुंतल की गोद में मिनल का सिर रखकर उससे सहवास करता है ।[२३]

अतृप्त यौन क्षुधा से जो यौन ग्रंथि विकसित होती है उसके कारण स्त्री निम्फो (Nimpho) हो जाती है । कृष्णा सोबती कृत 'मित्रो मरजानी' की मित्रो, किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई की सेठानी नर्मदा, रामदरश मिश्र कृत 'जल टूटता हुआ' की डलवा, नागार्जुन कृत 'इमरतिया' की गौरी सधुआइन, मणी मधुकर कृत 'सफेद मेमने' की सूरजा जाटणी आदि इस प्रकार की Nimpho स्त्रियाँ है । यौन कुंठा के कारण ऐसी Nimpho स्त्रियाँ मुँहफट भी बहुत हो जाती हैं । मित्रो मरजानी की मित्रो एक स्थान पर अपनी सास से कहती है - ''मेरा बस

चले तो गिनकर सो कौरव जन डालूँ, पर अम्मा अपने लाड़ले बेटे का भी तो आड़-तोड़ जुटाओ। निगोड़े मेरे पत्थर के बूत में भी कोई हरकत तो हो ?''[२४] यही मित्रो अपनी जिठानी से कहती है - ''देवर तुम्हारा - मेरा रोग नहीं पहचानता। बहुत हुआ हफ्ते पखवारे....और मेरी इस देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास है कि मछली-सी तड़पती हूँ।''[२५] 'इमरतिया' की गौरी भी साल में दो-तीन मर्द बदलती है। वह तो सरेआम कहती है कि उसमें इतनी यौन शक्ति है कि वह गरमाये हुए घोड़े को भी शांत करने की कुव्वत रखती है।[२६]

जिस प्रकार यौन ग्रंथि से कोई स्त्री Nimpho हो जाती है, ठीक उसी प्रकार यौन ग्रंथि से ही स्त्री में Frigidity भी आती है। ऐसी स्त्री में कामेच्छा या तो बिल्कुल मर जाती है या बिल्कुल कम रहती है। ऐसी स्त्रियों को Cold Woman कहा जाता है। कृष्णा सोबती कृत 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती, सफेद मेमने की बन्नो, निरूपमा सोबती कृत 'पतझड़ की आवाजें' की अनुभा आदि की गणना ऐसी ठंडी औरतों के अंतर्गत कर सकते हैं। 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती में यौनेच्छा होती है, परन्तु उसके रूप यौवन से आकर्षित होकर जैसे ही कोई युवक उसके निकट आता है, तब ऐन मौके पर वह एकदम ठंडी हो जाती हे। उसकी यौनेच्छा मर जाती है। इसके मूल में यौनग्रंथि कारणभूत है। शैशवकाल में वह एक बलात्कार का शिकार हुई थी। इस बलात्कार का इतना गहरा असर रत्ती पर पड़ता है कि वह यौन ग्रंथि की शिकार हो जाती हे और उस ग्रंथि के कारण एक जालिम ठंडी स्त्री बनकर रह जाती है। 'सफेद मेमने' की बन्नो में जो ठंडापन आया है, उसमें उसकी मामी की बातें कारणभूत है। सन् सैंतालीस के सांप्रदायिक दंगों में उसके माता-पिता तथा भाई-भाभी की हत्या हो गई थी। अत: बन्नो मामा-मामी के पास पली-बढ़ी थी। ''मामी ने ही उसे सन् सैंतालीस के दंगों की कहानी सुनाई थी, जिन्होंने बन्नो के माँ-बाप और भाई-भाभी को सदा के लिए मिटा दिये थे। किस तरह बाप की आँखें

फोड़ दी गईं। पेट में खंजर भोंककर किस तरह माँस निकाला गया। किस तरह भाई की चमड़ी को उबलते हुए आलू की तरह छिला गया। बोटी-बोटी काटकर फैंक दी गई। कैसे आठ-नव जनों ने माँ की नंगी देह को रौंदा, स्तनों की गुंडियाँ उतार लीं और कुल्हों के बीच में मिर्ची का चुरा भर दिया।''[२७] मामी ने जब बन्नो को यह सुनाया तो वह बेहोश हो गई थी। और तब से उसके अंदर का शारीरिक आकर्षण मानो बुझ गया था। बन्नो की भाँति 'पतझड की आवाजें' की अनुभा में जो शारीरिक ठंडापन है उसका कारण भी सैंतालीस के दंगों की कहानियाँ ही हैं। अनुभा का परिवार भी दंगो की विभीषिकाओं में झुलस चुका था। पाकिस्तान से भागते हुए आतताइयों ने रेल के डिब्बे में घुसकर अनुभा की भाभी के साथ बलात्कार किया था। अनुभा के भाई ने जब प्रतिरोध किया तब उसके पेट में चाकू भौंक दिया गया था। अनुभा तव कुछ ही महीनों की थी, परन्तु दंगों की यह नृशंस कहानियाँ उसने अपने घर-परिवार के कई लोगों से कई तरह से सुनी थीं। अत: उसमें भी सेक्स के प्रति एक अनाकर्षण का भाव विकसित होता है। अनुभा की यह यौनग्रंथि रमनेश के द्वारा टूट सकती थी। रमनेश के साथ अनुभा की सगाई हुई थी। परन्तु बाद में यह सगाई टूट जाती है, क्योंकि आर्थिक अभावों के कारण अनुभा के परिवार को एक ऐसे गंदे स्थान पर रहना पड़ता था जिसके आसपास़ वेश्याओं के कोठे थे। रमनेश को उसके मित्र चिढ़ाते थे कि उसकी फियान्सी कैसी जगह पर रहती है। राजकमल चौधरी कृत 'मछली मरी हुई' की शीरीं में भी ठंडापन पाया जाता है। शीरीं जब छ: साल की थी तब प्रसवकाल में उसकी माँ का देहांत हो गया था। तभी से उसके मन में एक ग्रंथि पड़ गई थी और माँ बनने की आकांक्षा मानों दफ़न हो गई थी। शीरीं की बड़ी बहन ने अपने फायदे के लिए शीरीं की इस ग्रंथि को और भी उलझाया और दुनियाभर के मर्दों के लिए उसमें नफ़रत का भाव पैदा कर दिया। बड़ी बहन की इन बातों के कारण शीरीं में पुरुष जाति के प्रति वितृष्णा का भाव जगता है और वह उनसे दूर दूर भागते हैं। शीरीं की

बड़ी बहन ऐसा जान बुझकर करती है । बड़ी बहन में यौनेच्छा बहुत ज्यादा थी । अपनी यौनेच्छा की तृप्ति के लिए वह शीरीं को पुरुषों से दूर रखती है और उसे लिसबीयन बना देती है ताकि शीरीं द्वारा वह अपनी यौनेच्छा को तृप्त करती रहे ।

गुलशेरखान शानी कृत 'काला जल' उपन्यास में विट्टी रौताइन उर्फ बीदारोगिन अपने पति मिर्जा की मृत्यु के बाद एक दूर के रिश्ते के देवर रज्जूमियाँ से फिर से निकाह पढ़ लेती है । बीदारोगिन को मिर्जा से एक लड़का हुआ था, जिसका नाम था रोशनबेग । जिस प्रकार 'आपका बंटी' उपन्यास में उसकी नायिका शकुन जब दूसरा विवाह कर लेती है तो उसका बड़ा बुरा असर उसके बेटे बंटी पर पडता है । ठीक उसी प्रकार यहाँ बीदारोगिन की दूसरी शादी से उसका बड़ा बुरा असर उसके बेटे रोशनबेग पर होता है और उसका व्यक्तित्व सदा-सदा के लिए कुंठित हो जाता है । वह हमेशा चुप रहता है । जब उसे हॉस्टेल में भेजा जाता है तो वह दूसरे बच्चों से अलग-थलग रहता है । यहाँ पर उसमें यौन ग्रंथि का निर्माण होता है और इस यौन ग्रंथि के कारण वह हस्तमैथुन की आदत का शिकार हो जाता है । उसका बडा ही संकेतात्मक चित्रण लेखक ने उपन्यास में किया है ।[२८]

इसी उपन्यास की सलमा आपा में भी यौन ग्रंथि को देखा जा सकता है । उसका ममेरा भाई बब्बन अपने पिता के बक्से से अश्लील बाजारू किताबों को चुराकर सलमा आपा को देता है । इन अश्लील बाजारु किताबों का बड़ा बुरा असर सलमा आपा पर पड़ता है और उसमें यौन ग्रंथि का निर्माण होता है, जिसके कारण वयसंधि अवस्था में ही वह बड़ी कामुक हो जाती है । इस कामुकता के कारण वह बिना विवाह किये ही एक युवक से शारीरिक तौर पर जुड़ती है । इसके कारण ही बाद में शंकास्पद स्थितियों में उनकी मौत होती है ।

सलमा आपा को गर्भ रह गया था। अत: या तो पारिवारिक कलंक से बचने के लिए उनके घरवाले उनकी हत्या कर देते हैं या अपनी लज्जाजनक स्थिति के कारण वह आत्महत्या कर लेती है। उपन्यास में कहीं उसका स्पष्ट जिक्र नहीं है। किन्तु इतना तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि सलमा आपा की मृत्यु के पीछे उनकी यह यौन ग्रंथि ही कारणभूत है।

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा कृत उपन्यास 'शहर में घूमता आइना' में भी ऐसे कई चरित्र मिलते हैं जो यौन ग्रंथि से पीडित है। फल्गुराम, चुनी, जगत, रामदित्ते आदि ऐसे ही पात्र हैं जो अपनी यौन ग्रंथि के कारण पागल हो जाते हैं। यौन ग्रंथि के कारण बिल्ला, जगना, देबू, प्यारे, सादीराम, सोहनलाल जैसे लोगों में समलैंगिकता (homosexuality) पायी जाती है। बिल्ला, देबू, प्यारे आदि जालंधर शहर के मशहूर गुंडे हैं जो अखाड़े के पहलवान भी हैं, परन्तु यौन ग्रंथि के कारण लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। उपन्यास के नायक चेतन के पिता सादीराम कृष्ण और राधा का नृत्य करनेवाले लड़कों के प्रति आकृष्ट होते थे। उपन्यास के एक पात्र अमीचंद के मामा सोहनलाल को बुढ़ापे में भी सुंदर लड़कों की आवश्यकता रहती थी जो उनके बिस्तर को गरम करें।[२९]

राजेन्द्र यादव कृत 'अनदेखे अनजान पुल' की नायिका निन्नी में कुरूपता की लघुग्रंथि के कारण यौन ग्रंथि का भी निर्माण होता है। निन्नी में यौन ग्रंथि का निर्माण सागर नामक एक लड़के के कारण होता है। सागर उसके पड़ोस में रहता था। वह स्वयं भी यौन ग्रंथि से पीड़ित दिखता है। वह सस्ती बाजारू किताबों को ले आता है और निन्नी को देता है। इन पुस्तकों के पठन के कारण निन्नी में यौन ग्रंथि पैदा होती है। सागर चौपड़ खेलने के बहाने से आता है और एक या दूसरे बहाने से निन्नी के अंगों को जब-तब छूता रहता

है । निन्नी के प्रति उसे प्रेम नहीं है, केवल वासना है । सागर उसकी वासना को भड़काता है । इस यौन ग्रंथि के कारण निन्नी में कुछ कुत्सित विकृतियाँ पैदा होती हैं जिनके कारण वह पुरुष-स्पर्श को प्राप्त करने की नई-नई युक्तियों को खोजती है । वह जान बूझकर ऐसे स्थानों पर जाती है जहाँ भीड़-भड़क्का होता है । वह अपने भाई के साथ दिल्ली प्रदर्शनी देखने इसलिए जाती हे कि उसने सुन रखा था कि दिल्ली की बसों में लोग खूब शैतानियाँ करते हैं ।

कमलेश्वर कृत 'डाक बंगला' उपन्यास का बतरा भी यौन ग्रंथि से पीडित है । यौन ग्रंथि के कारण वह एक प्रकार से सेक्स-मेनियाक हो जाता है और उसके कारण नये-नये शिकारों को फाँसता रहता है । उपन्यास की नायिका इरा उसका ऐसा ही एक शिकार है । इरा को जब बतरा से गर्भ रह जाता है तब इरा उस बच्चे को जन्म देना चाहती है, परन्तु बतरा उसको गर्भ गिरा देने की सलाह देता है । बतरा को बच्चों से नफ़रत है । वस्तुत: वह सेक्स-मेनियाक है । वह शादी ब्याह जैसे बखेड़ों में नहीं पड़ना चाहता । अत: इरा जब बच्चे को जन्म देने की जिद करती है तब वह टोनिक के बहाने उसे कोई दवाई पिला देता है और इस प्रकार उसके भृण को गिरा देता है ।

मन्नू भंडारी द्वारा प्रणीत उपन्यास 'आप का बंटी' उपन्यास के बंटी में यौन ग्रंथि विकसित होती है । बंटी को अकेले सोने की आदत नहीं है । वह या तो आया (मौसी) या फिर शकुन के साथ सोता रहा है । रात्रि के समय में अकेलेपन और अंधेरेपन से उसे डर लगता है । डॉ. जोशी से पुनर्विवाह करके जब शकुन बंटी को लेकर डॉ. जोशी के यहाँ रहने चली जाती है तब बंटी को शकुन से अलग डॉ. जोशी के बच्चों के साथ सोना पड़ता है । एक रात डरावने सपनों के कारण जब उसकी आँख खुल जाती है तो वह शकुन के कमरे की तरफ चल देता है । रात्रि का समय था, बच्चे सब सो गये थे । अत: डॉ. जोशी

और शकुन का कमरा खुला था । बंटी अप्रत्याशित रूप से वहाँ पहुँच जाता है । वहाँ का दृश्य देखकर वह क्षोभित और स्तंभित रह जाता है । दोनों नग्न अवस्था में पड़े हुए थे । बाद में यह दृश्य बार-बार बंटी के चक्षु पटल पर आता है और वह यौन ग्रंथि का शिकार हो जाता है । इस यौन ग्रंथि के कारण वह शिष्नुमा चीज में पुरुष के लिंग की कल्पना करने लगता है । एक बार स्कूल में पदार्थ चित्र की कक्षा में ड्राईंग बनाने के लिए अन्य चीज वस्तुओं के साथ एक बोटल रख गई थी । बंटी अपनी यौन-फैंटसी में कल्पना करने लगता है कि वह बोटल उलट गई है और वह बोटल डॉ. जोशी के दो पैरों के बीच में लटक जाती है ।[३०] इस प्रकार की यौन फैंटसियों के कारण बंटी शनै: शनै: पढने में कमजोर होने लगता है । एक गभरू और मासूम बच्चा अब मासूम नहीं रह जाता है ।

डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'अलग अलग वैतरणी' में मास्टर जवाहरसिंह, जगेसर, पटनहिया भाभी जैसे पात्रों में हमें यौन ग्रंथियाँ मिलती है । करैता गाँव का हेड मास्टर जवाहर सिंह यौन ग्रंथि के कारण अपने ही शिष्य के साथ हमबिस्तर होता है । पत्नी के अभाव में वह उसी से काम चलाता है । जगेसर यौनग्रंथि के कारण एकांत में नंगी औरतों की तस्वीरें देखता रहता है । वह इस प्रकार का अश्लील साहित्य (porniographic literature) शहर से खरीदकर लाता है और अपने जैसे दूसरे यौन विकृत लोगों को दिखाता है । पटनहिया भाभी अर्थात् दीपा एक शिक्षित एवं संस्कारी लड़की है परन्तु उसका विवाह कल्पू नामक इस तन-मन के रोगी से किया जाता है । बचपन से ही गलत आदतों में पड़ जाने के कारण कल्पू नपुंसक-सा हो गया है । पटनहिया भाभी की जिन्दगी एक कसकती हुई तड़प बनकर रह जाती है । फलत: शिक्षित और संस्कारी होते हुए भी वह यौन ग्रंथि का शिकार होती है । इस यौन ग्रंथि के कारण वह कई बार बच्चों को नंगा करके देखती है । हृदयेश कृत 'एक कहानी

अंतहीन' की नायिका भी ऐसी ही यौन ग्रंथि के कारण अपने छोटे भाई को स्नान कराते वक्त उसकी 'फुन्नी' को जब तब छूती रहती है ।

डॉ. रामदरश मिश्र कृत 'सूखता हुआ तालाब' में ऐसे कई यौन-पंगु पात्र मिलते हैं । मास्टर धर्मेन्द्र एक सेक्स-मेनियाक व्यक्ति है । अपनी वासना के प्रबल आवेग में वह पट्टीदारी के हिसाब से जो उसकी बहन लगती है उसके साथ ही काम संबंध को जोड़ लेता है और अविवाहित अवस्था में ही उसे गर्भवती बना देता है । इसी उपन्यास का एक पात्र मोतीलाल वैसे तो स्वयं में कॉमरेड कहते हैं किन्तु अपने छोटे भाई की विधवा पत्नी से यौन संबंध रखते हैं । चेनइया चमारिन तथा लीला Nimpho स्त्रियाँ है । गाँव के अनेक लोगों से चेनइया से शारीरिक सम्बन्ध है तो लीला एक ब्राह्मण कन्या है परन्तु अपनी प्रदीप्त यौनाग्नि को शांत करने के लिए वह रामदौना अहिर को छिप-छिप कर मिलती है । रामदौना अहिर और लीला के इस शारीरिक प्रेम व्यापार में रवीन्द्र नामक एक युवक बिचौलिया की भूमिका निभाता है । जब कभी रामदौन अहिर अनुपस्थित होता है तब लीला रवीन्द्र के द्वारा अपनी शारीरिक क्षुधा संतृप्त कर लेती है । इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में अनेक ऐसे पात्र मिलते हैं जो यौन ग्रंथि से पीड़ित रहते हैं ।

४:०५:०० निष्कर्ष :

समग्र अध्याय के विहंगावलोकन से हम निम्नलिखित निष्कर्षों तक सहजतया पहुँच सकते हैं :-

(१) अनैसर्गिक जीवन प्रक्रिया के कारण ग्रंथियों का निर्माण होता है । जहाँ सहजता में बाधा आयेगी वहाँ ग्रंथि का निर्माण होगा ।

(२) मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों के कारण मानवजीवन सहज या साधारण नहीं रह

पाता । उसके व्यवहार पर इन ग्रंथियों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता ।

(३) इन मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों में लघुताग्रंथि, प्रभुताग्रंथि, बद्धत्व ग्रंथि, इलेक्ट्रा ग्रंथि, इडीपस ग्रंथि, फोबिया ग्रंथि तथा यौन ग्रंथियों को परिगणित कर सकते है ।

(४) आत्मपीड़कता और परपीडकता के आधार पर सादवादी और मासोकवादी ग्रंथियों का निर्माण होता है ।

(५) लघुताग्रंथि के कारण व्यक्ति में हीन भाव पैदा होता है । अनदेखे अनजान पुल, अंधेरे बन्द कमरे, धरती धन न अपना, मछली मरी हुई प्रभृति उपन्यासों में हम इस लघुताग्रंथि की प्रवृत्ति को रेखांकित कर सकते हैं ।

(६) लघुताग्रंथि के कारण जहाँ व्यक्ति में हीनता बोध उत्पन्न होता है, वहाँ प्रभुताग्रंथि के कारण व्यक्ति अभिमानी और अहंकारी हो जाता है । पानी बीच मीन पियासी, टेराकोटा, आप का बंटी, मुक्ति बोध, प्रभृति उपन्यासों में हम इस प्रवृत्ति को रेखांकित कर सकते हैं ।

(७) बद्धत्वग्रंथि के कारण हम किसी व्यक्ति को अपना आदर्श मान लेते हैं और हमारे क्रिया-कलापों का परिसंचालन तदनुरुप होने लगता है । यह बद्धत्व भी कई तरह का होता है । मातृ-बद्धत्व, पितृ-बद्धत्व, अन्य बद्धत्व आदि । इस ग्रंथि के कारण भी मनुष्य का जीवन सहज नहीं रह पाता है ।

(८) इलेक्ट्रा ग्रंथि का निर्माण प्राय: महिलाओं में होता है । रूकोगी नहीं राधिका ?, नावें, पतझड की आवाजें, दो लड़कियाँ, दिनांत, मुझे चाँद

चाहिए प्रभृति उपन्यासों में कई एक पात्रों में हम इस ग्रंथि को विश्लेषित कर सकते हैं ।

(९) इडीपस ग्रंथि का निर्माण प्राय: पुरुषों में होता है । आप का बंटी, मछली मरी हुई, वे दिन, बँटता हुआ आदमी, प्रेत और छाया प्रभृति उपन्यासों में हम इस ग्रंथि को रेखांकित कर सकते हैं ।

(१०) भय मनुष्य की एक आदिम प्रवृत्ति है । प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी से डरता है । परन्तु भय की यह प्रवृत्ति साधारणता की सीमाओं का अतिक्रमण करती है तब फोबिया ग्रंथि का निर्माण होता है ।

(११) यौनग्रंथियों से व्यक्ति के जीवन में काम, विकार ओर काम विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं । मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में प्राय: यौनग्रंथियाँ पुष्कल मात्रा में उपलब्ध होती हैं ।

* * * *

संदर्भानुक्रम

१. उद्धृत : डॉ. पारूकान्त देसाई : चिन्तनिका : पृ.९७

२. उन्माद : भगवानसिंह : पृ.३४२

३. वही : पृ.२९३

४. वही : पृ.२५३

५. धरती धन न अपना : जगदीशचन्द्र : पृ. १०९

६. वही : पृ.५८

७. THE SEX LIFE FILE : Dr. S.J.TUFFILL (FRCS) : P.107

८. Ibid : P. 129

९. अंधेरे बन्द कमरे : मोहन राकेश : पृ.२४५

१०. 'लेखिका की कैफियत' : आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सम्पादक : भीष्म साहनी : पृ.४२०

११. मछली मरी हुई : राजकमल चौधरी : पृ. ६७-६८

१२. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ.११९

१३. दृष्टव्य : काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय : पृ.१८८

१४. त्यागपत्र : जैनेन्द्र : पृ.३५

१५. सीढियाँ : शशीप्रभा शास्त्री : पृ. ३२७

१६. पचपन खंभे लाल दीवारें : उषा प्रियंवदा : पृ.१०९

१७. उपन्यास : १९७३ में लिखा गया था ।

१८. दो लड़कियाँ : रजनी पनीकर : पृ.३१

१९. मुझे चांद चाहिए : सुरेन्द्र वर्मा : पृ. २४

२०. प्रेत और छाया : इलाचन्द्र जोशी : पृ. ३८

२१. वही : पृ.४३

२२. वही : पृ.३८७

२३. दृष्टव्य : आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ. ९४

२४. मित्रो मरजानी : कृष्णा सोबती : पृ. ८४

२५. वही : पृ.२०

२६. दृष्टव्य : 'इमरतिया' नागार्जुन : पृ. २७

२७. सफेद मेमने : मणि मधुकर : पृ.८१

२८. दृष्टव्य : कालाजल : गुलशेरखान शानी : पृ.७६

२९. दृष्टव्य : शहर में घूमता आईना : उपेन्द्रनाथ अश्क : पृ.७२, १९९, १५३, ४५१

३०. आपका बंटी : मन्नू भंडारी : पृ. १३३